यूहन्ना

यीशु का आना

1 आदि में शब्द* था। शब्द परमेश्वर के साथ था। शब्द ही परमेश्वर था। 2यह शब्द ही आदि में परमेश्वर के साथ था। 3दुनिया की हर वस्तु उसी से उपजी। उसके बिना किसी की भी रचना नहीं हुई। 4उसी में जीवन था और वह जीवन ही दुनिया के लोगों के लिये प्रकाश (ज्ञान, भलाई) था। 5प्रकाश अँधेरे में चमकता है पर अँधेरा उसे समझ नहीं पाया।

6परमेश्वर का भेजा हुआ एक मनुष्य आया जिसका नाम यूहन्ना था। 7वह एक साक्षी के रूप में आया था ताकि वह लोगों को प्रकाश के बारे में बता सके। जिससे सभी लोग उसके द्वारा उस प्रकाश में विश्वास कर सकें। 8वह खुद प्रकाश नहीं था बल्कि वह तो लोगों को प्रकाश की साक्षी देने आया था। 9उस प्रकाश की, जो सच्चा था, जो हर मनुष्य को ज्ञान की ज्योति देगा, जो धरती पर आने वाला था।

10वह इस जगत में ही था और यह जगत उसी के द्वारा अस्तित्व में आया पर जगत ने उसे पहचाना नहीं। 11वह अपने घर आया था और उसके अपने ही लोगों ने उसे अपनाया नहीं। 12पर जिन्होंने उसे अपनाया उन सबको उसने परमेश्वर की संतान बनने का अधिकार दिया। 13परमेश्वर की संतान के रूप में वह कुदरती तौर पर न तो लहू से पैदा हुआ था, न किसी शारीरिक इच्छा से और न ही माता-पिता की योजना से। बल्कि वह परमेश्वर से उत्पन्न हुआ।

14उस आदि शब्द ने देह धारण कर हमारे बीच निवास किया। हमने परम पिता के एकमात्र पुत्र के रूप में उसकी महिमा का दर्शन किया। वह करुणा और सत्य से पूर्ण था। 15यूहन्ना ने उसकी साक्षी दी और पुकार कर कहा यह वही है जिसके बारे में मैंने कहा था 'वह जो मेरे बाद आने वाला है, मुझसे महान है, मुझसे आगे है क्योंकि वह मुझसे पहले मौजूद था।'

16उसकी करुणा और सत्य की पूर्णता से हम सबने अनुग्रह पर अनुग्रह प्राप्त किये। 17हमें व्यवस्था का विधान देने वाला मूसा था पर करुणा और सत्य हमें यीशु मसीह से मिले। 18परमेश्वर को कभी किसी ने नहीं देखा किन्तु परमेश्वर के एकमात्र पुत्र ने, जो सदा परम पिता के साथ है उसे हम पर प्रकट किया।

यूहन्ना की यीशु के विषय में साक्षी

(मत्ती 3:1-12; मरकुस 1:2-8; लूका 3:15-17)

19-20जब यरूशलेम के यहूदियों ने उसके पास लेवियों और याजकों को यह पूछने के लिये भेजा "तुम कौन हो?" तो उसने साक्षी दी और बिना झिझक स्वीकार किया, "मैं मसीह नहीं हूँ।"

21उन्होंने यूहन्ना से पूछा, "तो तुम कौन हो, क्या तुम एलिय्याह हो?"

यूहन्ना ने जवाब दिया, "नहीं, मैं वह नहीं हूँ।"

यहूदियों ने पूछा, "क्या तुम भविष्यवक्ता हो?"

उसने उत्तर दिया, "नही।"

22फिर उन्होंने उससे पूछा, "तो तुम कौन हो? हमें बताओ ताकि जिन्होंने हमें भेजा है, उन्हें हम उत्तर दे सकें। तुम अपने विषय में क्या कहते हो?"

23यूहन्ना ने कहा:

"मैं उसकी आवाज़ हूँ जो जंगल में पुकार रहा है:
'प्रभु के लिये सीधा रास्ता बनाओ'" *यशायाह 40:3*

24इन लोगों को फरीसियों ने भेजा था। 25उन्होंने उससे पूछा, "यदि तुम न मसीह हो, न एलिय्याह हो, और न भविष्यवक्ता तो लोगों को बपतिस्मा क्यों देते हो?"

26उन्हें जवाब देते हुए यूहन्ना ने कहा, "मैं उन्हें जल से बपतिस्मा देता हूँ। तुम्हारे ही बीच एक व्यक्ति है जिसे तुम लोग नहीं जानते। 27यह वही है जो मेरे बाद आनेवाला है। मैं उसके जूतों की तनियाँ खोलने लायक भी नहीं हूँ।"

28ये घटनाएँ यरदन के पार बैतनिय्याह में घटीं जहाँ यूहन्ना बपतिस्मा दिया करता था।

29अगले दिन यूहन्ना ने यीशु को अपनी तरफ़ आते देखा और कहा, "परमेश्वर के मेमने को देखो जो जगत के पाप को हर ले जाता है। 30यह वही है जिसके बारे में मैंने कहा था, 'एक पुरुष मेरे पीछे आने वाला है

शब्द मूल में यूनानी भाषा का शब्द है लोगोस जिसका अर्थ है संदेश। इसका अनुवाद सुसमाचार भी किया जा सकता है। यहाँ इसका अर्थ है–यीशु, यीशु एक रास्ता है जिसके द्वारा खुद परम पिता ने लोगों को अपने बारे में बताया।

जो मुझसे महान है, मुझसे आगे है क्योंकि वह मुझसे
पहले विद्यमान था।' 31मैं खुद उसे नहीं जानता था
किन्तु मैं इसलिये बपतिस्मा देता आ रहा हूँ ताकि इस्राएल
के लोग उसे जान लें।"

32फिर यूहन्ना ने अपनी यह साक्षी दी, "मैनें देखा कि
कबूतर के रूप में स्वर्ग से नीचे उतरती हुई आत्मा उस
पर आ टिकी। 33मैं खुद उसे नहीं जान पाया, पर जिसने
मुझे जल से बपतिस्मा देने के लिये भेजा था मुझसे
कहा, "तुम आत्मा को उतरते और किसी पर टिकते
देखोगे, यह वही पुरुष है जो पवित्र आत्मा से बपतिस्मा
देता है।' 34मैनें उसे देखा है और मैं प्रमाणित करता हूँ
कि वह परमेश्वर का पुत्र है।"

यीशु के प्रथम अनुयायी

35अगले दिन यूहन्ना अपने दो चेलों के साथ वहाँ
फिर उपस्थित था। 36जब उसने यीशु को पास से गुजरते
देखा, उसने कहा, "देखो परमेश्वर का मेमना।"

37जब उन दोनों चेलों ने उसे यह कहते सुना तो वे
यीशु के पीछे चल पड़े। 38जब यीशु ने मुड़कर देखा कि
वे पीछे आ रहे हैं तो उनसे पूछा, "तुम्हें क्या चाहिये?"

उन्होंने जवाब दिया, "रब्बी, ("रब्बी" अर्थात् "गुरु")
तेरा निवास कहाँ है?" 39यीशु ने उन्हें उत्तर दिया,
"आओ और देखो" और वे उसके साथ हो लिये। उन्होंने
देखा कि वह कहाँ रहता है। उस दिन वे उसके साथ
ठहरे क्योंकि लगभग शाम के चार बज चुके थे।

40जिन दोनों ने यूहन्ना की बात सुनी थी और यीशु
के पीछे गये थे उनमें से एक शमौन पतरस का भाई
अन्द्रियास था। 41उसने पहले अपने भाई शमौन को
पाकर उससे कहा, "हमें मसीह: अर्थात् अभिषिक्त*
मिल गया है।"

42फिर अन्द्रियास शमौन को यीशु के पास ले आया।
यीशु ने उसे देखा और कहा, "तू यूहन्ना का पुत्र शमौन
है। तू कैफ़ा (यानी 'पतरस') कहलायेगा

43अगले दिन यीशु ने गलील जाने का निश्चय किया।
फिर फिलिप्पुस को पाकर यीशु ने उससे कहा, "मेरे
पीछे चला आ।" 44फिलिप्पुस अन्द्रियास और पतरस के
नगर बैतसैदा से था। 45फिलिप्पुस को नतनएल मिला
और उसने उससे कहा, "हमें वह मिल गया है जिसके
बारे में मूसा ने व्यवस्था के विधान में और भविष्यवक्ताओं
ने लिखा है। वह है यूसुफ का बेटा, नासरत का यीशु।"

46फिर नतनएल ने उससे पूछा, "नासरत से भी कोई
अच्छी वस्तु पैदा हो सकती है?"

फिलिप्पुस ने जवाब दिया, "जाओ और देखो।"

47यीशु ने नतनएल को अपनी तरफ आते हुए देखा
और उसके बारे में कहा, "यह है एक सच्चा इस्राएली
जिसमें कोई खोट नहीं है।"

48नतनएल ने पूछा, "तू मुझे कैसे जानता है?"

जवाब में यीशु ने कहा, "उससे पहले कि फ़िलिप्पुस
ने तुझे बुलाया था, मैंने देखा था कि तू अंजीर के पेड़
के नीचे था।" 49नतनएल ने उत्तर में कहा, "हे रब्बी, तू
परमेश्वर का पुत्र है, तू इस्राएल का राजा है।"

50 इसके जवाब में यीशु ने कहा, "तुम इसलिये विश्वास
कर रहे हो कि मैंने तुमसे यह कहा कि मैनें तुम्हें
अंजीर के पेड़ तले देखा। तुम आगे इससे भी बड़ी बातें
देखोगे।" 51इसने उससे फिर कहा, "मैं तुम्हें सत्य बता
रहा हूँ तुम स्वर्ग को खुलते और स्वर्गदूतों को मनुष्य
के पुत्र पर उतरते–चढ़ते देखोगे।"

काना में विवाह

2 गलील के काना में तीसरे दिन किसी के यहाँ
विवाह था। यीशु की माँ भी मौजूद थी। 2विवाह में
यीशु और उसके शिष्यों को भी बुलाया गया था। 3वहाँ
जब दाखरस खत्म हो गया, तो यीशु की माँ ने कहा,
"उनके पास अब और दाखरस नहीं है।"

4यीशु ने उससे कहा, "यह तू मुझसे क्यों कह रही है?
मेरा समय अभी नहीं आया।"

5फिर उसकी माता ने सेवकों से कहा, "वही करो जो
तुमसे यह कहता है।" 6वहाँ पानी भरने के पत्थरे के
छह मटके रखे थे। ये मटके वैसे ही थे जैसे यहूदी पवित्र
स्नान के लिये काम में लाते थे। हर मटके में कोई बीस
से तीस गैलन तक पानी आता था।

7यीशु ने सेवकों से कहा, "मटकों को पानी से भर
दो।" और सेवकों ने मटकों को लबालब भर दिया।

8फिर उसने उनसे कहा, "अब थोड़ा बाहर निकालो,
और दावत का इन्तज़ाम कर रहे प्रधान के पास उसे ले
जाओ।" और वे उसे ले गये।

9फिर दावत के प्रबन्धकर्त्ता ने उस पानी को चखा जो
दाखरस बन गया था। उसे पता ही नहीं चला कि वह
दाखरस कहाँ से आया। पर उन सेवकों को इसका पता
था जिन्होंने पानी निकाला था। फिर दावत के प्रबन्धक
ने दूल्हे को बुलाया 10और उससे कहा, "हर कोई
पहले– बढ़िया दाखरस परोसता है और जब मेहमान
काफ़ी तृप्त हो चुकते हैं तो फिर घटिया। पर तुमने तो
उत्तम दाखरस अब तक बचा रखा है।"

11यीशु ने गलील के काना में यह पहला आश्चर्यकर्म
करके अपनी महिमा प्रकट की। जिससे उसके शिष्यों
ने उसमें विश्वास किया।

यीशु मन्दिर में

(मत्ती 21:12-13; मरकुस 11:15-17; लूका 19:45-46)

12इसके बाद यीशु अपनी माता, भाइयों और शिष्यों
के साथ कफ़रनहूम चला गया जहाँ वे कुछ दिन ठहरे।
13यहूदियों का फ़सह पर्व नज़दीक था। इसलिये यीशु

अभिषिक्त मूल में ख्रीष्ट।

यरूशलेम चला गया। 14वहाँ मन्दिर में यीशु ने देखा कि
लोग मवेशियों, भेड़ों और कबूतरों की बिक्री कर रहे हैं
और सिक्के बदलने वाले सौदागर अपनी गद्दियों पर बैठे
हैं। 15इसलिए उसने रस्सियों का एक कोड़ा बनाया और
सबको, मवेशियों और भेड़ों समेत, बाहर खदेड़ दिया।
मुद्रा बदलने वालों के सिक्के उड़ेल दिये और उनकी
चौकियाँ पलट दीं। 16कबूतर बेचने वालों से उसने कहा,
"इन्हें यहाँ से बाहर ले जाओ। मेरे परमपिता के घर को
बाजार मत बनाओ।"

17इस पर उसके शिष्यों को याद आया कि शास्त्रों में
लिखा है:

"तेरे घर के लिये मेरी धुन मुझे खा डालेगी।"

भजन संहिता 69:9

18जवाब में यहूदियों ने यीशु से कहा, "तू हमें कौन सा
अद्भुत चिह्न दिखा सकता है, जिससे तू जो कुछ कर
रहा है, उसका तू अधिकारी है यह साबित हो सके?"
19यीशु ने उन्हें जवाब में कहा, "इस मन्दिर को गिरा
दो और मैं तीन दिन के भीतर इसे फिर बना दूँगा।"
20इस पर यहूदी बोले, "इस मन्दिर को बनाने में
छियालीस साल लगे थे, और तू इसे तीन दिन में बनाने
जा रहा है?"
21(किन्तु अपनी बात में जिस मन्दिर की चर्चा यीशु
ने की थी वह उसका अपना ही शरीर था। 22आगे
चलकर जब वह मौत के बाद फिर जी उठा तो उसके
अनुयायियों को याद आया कि यीशु ने यह कहा था,
और शास्त्रों पर और यीशु के शब्दों पर विश्वास किया।)
23फ़सह के पर्व के दिनों जब यीशु यरूशलेम में था,
बहुत से लोगों ने उसके अद्भुत चिह्नों और कर्मों को
देखकर उसमें विश्वास किया। 24किन्तु यीशु ने अपने
आपको उनके भरोसे नहीं छोड़ा, क्योंकि वह सब लोगों
को जानता था। 25उसे इस बात की कोई जरूरत नहीं
थी कि कोई आकर उसे लोगों के बारे में बताए,
क्योंकि लोगों के मन में क्या है, इसे वह जानता था।

यीशु और नीकुदेमुस

3 वहाँ फरीसियों का एक आदमी था जिसका नाम
था नीकुदेमुस। वह यहूदियों का नेता था। 2वह यीशु
के पास रात में आया और उससे बोला, "हे गुरु, हम
जानते हैं कि तू गुरु है और परमेश्वर की ओर से आया
है, क्योंकि ऐसे आश्चर्यकर्म जैसे तू करता है परमेश्वर
की सहायता के बिना कोई नहीं कर सकता।"
3जवाब में यीशु ने उससे कहा, "सत्यसत्य, मैं तुम्हें
बताता हूँ, यदि कोई व्यक्ति नये सिरे से जन्म न ले तो
वह परमेश्वर के राज्य को नहीं देख सकता।"
4नीकुदेमुस ने उससे कहा, "कोई आदमी बूढ़ा हो
जाने के बाद फिर जन्म कैसे ले सकता है? निश्चय ही
वह अपनी माँ की कोख में प्रवेश करके दुबारा तो
जन्म ले नहीं सकता!"
5यीशु ने जवाब दिया, "सच्चाई तुम्हें मैं बताता हूँ। यदि
कोई आदमी जल और आत्मा से जन्म नहीं लेता तो वह
परमेश्वर के राज्य में प्रवेश नहीं पा सकता। 6माँस से
केवल माँस ही पैदा होता है; और जो आत्मा से उत्पन्न
हो वह आत्मा है। 7मैंने तुमसे जो कहा है उस पर
आश्चर्य मत करो, 'तुम्हें नये सिरे से जन्म लेना ही
होगा।'

8हवा जिधर चाहती है, उधर बहती है। तुम उसकी
आवाज़ सुन सकते हो। किन्तु तुम यह नहीं जान
सकते कि वह कहाँ से आ रही है, और कहाँ को जा
रही है। आत्मा से जन्म हुआ हर व्यक्ति भी ऐसा ही
है।" 9जवाब में नीकुदेमुस ने उससे कहा, "यह कैसे हो
सकता है?"
10यीशु ने उसे जवाब देते हुए कहा, "तुम इस्राएलियों
के गुरु हो फिर भी यह नहीं जानते? 11मैं तुम्हें सच्चाई
बताता हूँ, हम जो जानते हैं, वही बोलते हैं। और वही
बताते हैं जो हमने देखा है, पर तुम लोग जो हम कहते हैं
उसे स्वीकार नहीं करते। 12मैंने तुम्हें धरती की बातें
बतायीं और तुमने उन पर विश्वास नहीं किया इसलिये
अगर मैं स्वर्ग की बातें बताऊँ तो तुम उन पर कैसे
विश्वास करोगे? 13स्वर्ग में ऊपर कोई नहीं गया, सिवाय
उसके, जो स्वर्ग से उतर कर आया है–यानी मानव–पुत्र।
14"जैसे मूसा ने रेगिस्तान में साँप को ऊपर उठा
लिया था, वैसे ही मानव–पुत्र भी ऊपर उठा लिया
जायेगा 15ताकि वे सब जो उसमें विश्वास करते हैं,
अनन्त जीवन पा सकें।"

16परमेश्वर को जगत से इतना प्रेम था कि उसने
अपने एकमात्र पुत्र को दे दिया, ताकि हर वह आदमी
जो उसमें विश्वास रखता है, नष्ट न हो जाये बल्कि
उसे अनन्त जीवन मिल जाये। 17परमेश्वर ने अपने बेटे
को दुनिया में इसलिये नहीं भेजा कि वह दुनिया को
अपराधी ठहराये बल्कि उसे इसलिये भेजा कि उसके
द्वारा दुनिया का उद्धार हो। 18जो उसमें विश्वास
रखता है उसे दोषी न ठहराया जाय पर जो उसमें
विश्वास नहीं रखता, उसे दोषी ठहराया जा चुका है
क्योंकि उसने परमेश्वर के एकमात्र पुत्र के नाम में
विश्वास नहीं रखा है। 19इस निर्णय का आधार यह है
कि ज्योति इस दुनिया में आ चुकी है पर ज्योति के
बजाय लोग अंधेरे को अधिक महत्त्व देते हैं। क्योंकि
उनके कार्य बुरे हैं। 20हर वह आदमी जो पाप करता है
ज्योति से घृणा रखता है और ज्योति के नज़दीक नहीं
आता ताकि उसके पाप उजागर न हो जायें। 21पर वह
जो सत्य पर चलता है, ज्योति के निकट आता है ताकि
यह प्रकट हो जाये कि उसके कर्म परमेश्वर के
द्वारा कराये गये हैं।

यूहन्ना द्वारा यीशु का बपतिस्मा

22इसके बाद यीशु अपने अनुयायियों के साथ यहूदिया
के इलाके में चला गया। वहाँ उनके साथ ठहर कर,
वह लोगों को बपतिस्मा देने लगा। 23वहीं शालेम के
पास ऐनोन में यूहन्ना भी बपतिस्मा दिया करता था
क्योंकि वहाँ पानी बहुतायत में था। लोग वहाँ आते और
बपतिस्मा लेते थे। 24(यूहन्ना को अभी तक बंदी नहीं
बनाया गया था।)

25अब यूहन्ना के कुछ शिष्यों और एक यहूदी के
बीच स्वच्छताकरण को लेकर बहस छिड़ गयी। 26इसलिये
वे यूहन्ना के पास आये और बोले, "हे रब्बी, जो व्यक्ति
यरदन के उस पार तेरे साथ था और जिसके बारे में
तूने बताया था, वही लोगों को बपतिस्मा दे रहा है, और
हर आदमी उसके पास जा रहा है।"

27जवाब में यूहन्ना ने कहा, "किसी आदमी को तब
तक कुछ नहीं मिल सकता जब तक वह उसे स्वर्ग से
न दिया गया हो। 28तुम सब गवाह हो कि मैंने कहा था
'मैं मसीह नहीं हूँ' बल्कि मैं तो उससे पहले भेजा गया
हूँ। 29दूल्हा वही है जिसे दुल्हन मिलती है। पर दूल्हे का
मित्र जो खड़ा रहता है और उसकी अगुवाई में जब दूल्हे
की आवाज़ को सुनता है, तो बहुत खुश होता है। मेरी
यही खुशी अब पूरी हुई है। 30अब निश्चित है कि
उसकी महिमा बढ़े और मेरी घटे!

वह जो स्वर्ग से उतरा

31"जो ऊपर से आता है वह सबसे महान् है। वह जो
धरती से है, धरती से जुड़ा है। इसलिये वह धरती की ही
बातें करता है। जो स्वर्ग से उतरा है, सबके ऊपर है;
32उसने जो कुछ देखा है, और सुना है, वह उसकी
साक्षी देता है पर उसकी साक्षी को कोई ग्रहण नहीं
करना चाहता। 33जो उसकी साक्षी को मानता है वह
प्रमाणित करता है कि परमेश्वर सच्चा है। 34क्योंकि
वह, जिसे परमेश्वर ने भेजा है, परमेश्वर की ही बातें
बोलता है। क्योंकि परमेश्वर ने उसे आत्मा का अनन्त
दान दिया है। 35पिता अपने पुत्र को प्यार करता है।
और उसी के हाथों में उसने सब कुछ सौंप दिया है।
36इसलिए वह जो उसके पुत्र में विश्वास करता है
अनन्त जीवन पाता है पर वह जो परमेश्वर के पुत्र की
बात नहीं मानता उसे वह जीवन नहीं मिलेगा। इसके
बजाय उस पर परम पिता परमेश्वर का क्रोध बना
रहेगा।"

यीशु और सामरी स्त्री

4 जब यीशु को पता चला कि फरीसियों ने सुना है
कि यीशु यूहन्ना से अधिक लोगों को बपतिस्मा दे
रहा है और उन्हें शिष्य बना रहा है 2(यद्यपि यीशु स्वयं
बपतिस्मा नहीं दे रहा था बल्कि यह उसके शिष्य कर
रहे थे।) 3तो वह यहूदिया को छोड़कर एक बार फिर
वापस गलील चला गया। 4इस बार उसे सामरिया होकर
जाना पड़ा।

5इसलिये वह सामरिया के एक नगर सूखार में आया।
यह नगर उस भूमि के पास था जिसे याकूब ने अपने
बेटे यूसुफ को दिया था। 6वहाँ याकूब का कुआँ था।
यीशु इस यात्रा में बहुत थक गया था इसलिये वह कुएँ
के पास बैठ गया। समय लगभग दोपहर का था। 7एक
सामरी स्त्री जल भरने आई। यीशु ने उससे कहा, "मुझे
जल दे।" 8(शिष्य लोग भोजन खरीदने के लिए नगर में
गये हुए थे।) 9सामरी स्त्री ने उससे कहा, "तू यहूदी
होकर भी मुझसे पीने के लिए जल क्यों माँग रहा है मैं
तो एक सामरी स्त्री हूँ?" (यहूदी तो सामरियों से कोई
सम्बन्ध नहीं रखते।) 10उत्तर में यीशु ने उससे कहा,
"यदि तू केवल इतना जानती कि परमेश्वर ने क्या दिया
है और वह कौन है जो तुझसे कह रहा है 'मुझे जल दे'
तो तू उससे माँगती और वह तुझे स्वच्छ जीवन-जल
प्रदान करता।"

11स्त्री ने उससे कहा, "हे महाशय, तेरे पास तो कोई
बर्तन तक नहीं है और कुआँ बहुत गहरा है फिर तेरे
पास जीवन-जल कैसे हो सकता है? क्या तू हमारे पूर्वज
याकूब से बड़ा है 12जिसने हमें यह कुआँ दिया और
अपने बच्चों और मवेशियों के साथ खुद इसका जल
पिया था।"

13उत्तर में यीशु ने उससे कहा, "हर एक जो इस कुएँ
का पानी पीता है, उसे फिर प्यास लगेगी 14किन्तु वह
जो उस जल को पियेगा, जिसे मैं दूँगा, फिर कभी प्यासा
नहीं रहेगा। बल्कि मेरा दिया हुआ जल उसके अन्तर में
एक पानी के झरने का रूप ले लेगा जो उमड़-घुमड़
कर उसे अनन्त जीवन प्रदान करेगा।"

15तब उस स्त्री ने उससे कहा, "हे महाशय, मुझे वह
जल प्रदान कर ताकि मैं फिर कभी प्यासी न रहूँ और
मुझे यहाँ पानी खेंचने न आना पड़े।"

16इस पर यीशु ने उससे कहा, "जाओ अपने पति को
बुलाकर यहाँ ले आओ।"

17उत्तर में स्त्री ने कहा, "मेरा कोई पति नहीं है।"
यीशु ने उससे कहा, "जब तुम यह कहती हो कि
तुम्हारा कोई पति नहीं है तो तुम ठीक ही कहती हो।
18तुम्हारे पाँच पति थे और तुम अब जिस पुरुष के साथ
रहती हो वह भी तुम्हारा पति नहीं है इसलिये तुमने जो
कहा है सच कहा है।"

19इस पर स्त्री ने उससे कहा, "महाशय, मुझे तो
लगता है कि तू अन्तर्यामी है। 20हमारे पूर्वजों ने इस
पर्वत पर आराधना की है पर तू कहता है कि यरूशलेम
ही आराधना की जगह है।"

21यीशु ने उससे कहा, "हे स्त्री, मेरा विश्वास कर।
समय आ रहा है जब तुम परमपिता की आराधना न

इस पर्वत पर करोगे और न यरूशलेम में। 22तुम सामरी लोग उसे नहीं जानते जिसकी आराधना करते हो। पर हम यहूदी उसे जानते हैं जिसकी आराधना करते हैं। क्योंकि उद्धार यहूदियों से ही है। 23पर समय आ रहा है और आ ही गया है जब सच्चे उपासक पिता की आराधना आत्मा और सच्चाई में करेंगे। परम पिता ऐसा ही उपासक चाहता है। 24परमेश्वर आत्मा है और इसीलिए जो उसकी आराधना करें उन्हें आत्मा और सच्चाई में ही उसकी आराधना करनी होगी।”

25फिर स्त्री ने उससे कहा, “मैं जानती हूँ कि मसीह यानी ख्रीष्ट आने वाला है। जब वह आयेगा तो हमें सब कुछ बताएगा।”

26यीशु ने उससे कहा, “मैं जो तुझसे बात कर रहा हूँ, वही हूँ।”

27तभी उसके शिष्य वहाँ लौट आये। और उन्हें यह देखकर सचमुच बड़ा आश्चर्य हुआ कि वह एक स्त्री से बातचीत कर रहा है। पर किसी ने भी उससे कुछ कहा नहीं, “तुझे इस स्त्री से क्या लेना है या तू इससे बातें क्यों कर रहा है?”

28वह स्त्री अपने पानी भरने के घड़े को वहीं छोड़कर नगर में वापस चली गयी और लोगों से बोली, 29“आओ और देखो, एक ऐसा पुरुष है जिसने, मैंने जो कुछ किया है, वह सब कुछ मुझे बता दिया। क्या तुम नहीं सोचते कि वह मसीह हो सकता है?” 30इस पर लोग नगर छोड़कर यीशु के पास जा पहुँचे।

31इसी समय यीशु के शिष्य उससे विनती कर रहे थे, “हे रब्बी, कुछ खा ले।”

32पर यीशु ने उनसे कहा, “मेरे पास खाने के लिए ऐसा भोजन है जिसके बारे में तुम कुछ भी नहीं जानते।”

33इस पर उसके शिष्य आपस में एक दूसरे से पूछने लगे, “क्या कोई उसके खाने के लिए कुछ लाया होगा?”

34यीशु ने उनसे कहा, “मेरा भोजन उसकी इच्छा को पूरा करना है जिसने मुझे भेजा है। और उस काम को पूरा करना है जो मुझे सौंपा गया है। 35तुम अक्सर कहते हो, ‘चार महीने और हैं तब फ़सल आयेगी ‘देखो मैं तुम्हें बताता हूँ अपनी आँखें खोलो और खेतों की तरफ़ देखो वे कटने के लिए तैयार हो चुके हैं। वह जो कटाई कर रहा है, अपनी मज़दूरी पा रहा है। 36और अनन्त जीवन के लिये फसल इकट्ठी कर रहा है। ताकि फ़सल बोने वाला और काटने वाला दोनों ही साथ-साथ आनन्दित हो सकें। 37यह कथन वास्तव में सच है। एक व्यक्ति बोता है और दूसरा व्यक्ति काटता है। 38मैंने तुम्हें उस फसल को काटने भेजा है जिस पर तुम्हारी मेहनत नहीं लगी है। जिस पर दूसरों ने मेहनत की है और उनकी मेहनत का फल तुम्हें मिला है।”

39उस नगर के बहुत से सामरियों ने यीशु में विश्वास किया क्योंकि उस स्त्री के उन शब्दों को उन्होंने साक्षी माना था कि, “मैंने जब कभी जो कुछ किया उसने मुझे उसके बारे में सब कुछ बता दिया।” 40जब सामरी उसके पास आये तो उन्होंने उससे उनके साथ ठहरने के लिए विनती की। इस पर वह दो दिन के लिए वहाँ ठहरा। 41और उसके वचन से प्रभावित होकर बहुत से और लोग भी उसके विश्वासी हो गये।

42उन्होंने उस स्त्री से कहा, “अब हम केवल तुम्हारी साक्षी के कारण ही विश्वास नहीं रखते बल्कि अब हमने स्वयं उसे सुना है। और अब हम यह जान गये हैं कि वास्तव में यही वह व्यक्ति है जो जगत् का उद्धारकर्त्ता है।”

राजकर्मचारी के बेटे को जीवन-दान

(मत्ती 8:5-13; लूका 7:1-10)

43दो दिन बाद वह वहाँ से गलील को चल पड़ा। 44(क्योंकि यीशु ने खुद कहा था कि कोई नबी अपने ही देश में कभी आदर नहीं पाता है।) 45इस तरह जब वह गलील आया तो गलीलियों ने उसका स्वागत किया क्योंकि उन्होंने वह सब कुछ देखा था जो उसने यरूशलेम में पर्व के दिनों किया था। (क्योंकि वे सब भी इस पर्व में शामिल थे।)

46यीशु एक बार फिर गलील में काना गया जहाँ उसने पानी को दाखरस में बदला था। अब की बार कफ़रनहूम में एक राजा का अधिकारी था जिसका बेटा बीमार था। 47जब राजाधिकारी ने सुना कि यहूदिया से यीशु गलील आया है तो वह उसके पास आया और विनती की कि वह कफ़रनहूम जाकर उसके बेटे को अच्छा कर दे। क्योंकि उसका बेटा मरने को पड़ा था। 48यीशु ने उससे कहा, “अद्भुत संकेत और आश्चर्यकर्म देखे बिना तुम लोग विश्वासी नहीं बनोगे।”

49राजाधिकारी ने उससे कहा, “महोदय, इससे पहले कि मेरा बच्चा मर जाये, मेरे साथ चल।”

50यीशु ने उत्तर में कहा, “जा तेरा पुत्र जीवित रहेगा।”

यीशु ने जो कुछ कहा था, उसने उस पर विश्वास किया और घर चल दिया। 51वह घर लौटते हुए अभी रास्ते में ही था कि उसे उसके नौकर मिले और उसे समाचार दिया कि उसका बच्चा ठीक हो गया।

52उसने पूछा, “सही हालत किस समय से ठीक होना शुरू हुई थी?”

उन्होंने जवाब दिया, “कल दोपहर एक बजे उसका बुखार उतर गया था।”

53बच्चे के पिता को ध्यान आया कि यह ठीक वही समय था जब यीशु ने उससे कहा था, “तेरा पुत्र जीवित रहेगा।” इस तरह अपने सारे परिवार के साथ वह विश्वासी हो गया।

54यह दूसरा अद्भुत चिह्न था जो यीशु ने यहूदियों को गलील आने पर दर्शाया।

तालाब पर ला–इलाज रोगी का ठीक होना

5 इसके बाद यीशु यहूदियों के एक उत्सव में यरूशलेम
गया। 2यरूशलेम में भेड़–द्वार के पास एक तालाब
है, इब्रानी भाषा में इसे ‘बैतहसदा’ कहा जाता है। इसके
किनारे पाँच बरामदे बने हैं 3जिनमें नेत्रहीन, अपंग और
लकवे के बीमारों की भीड़ पड़ी रहती है। * 5इन
रोगियों में एक ऐसा मरीज़ भी था जो अड़तीस वर्ष से
बीमार था। 6जब यीशु ने उसे वहाँ लेटे देखा और यह
जाना कि वह इतने लम्बे समय से बीमार है तो यीशु ने
उससे कहा, “क्या तुम निरोग होना चाहते हो?” 7रोगी
ने जवाब दिया, “हे प्रभु, मेरे पास कोई नहीं है जो जल
के हिलने पर मुझे तालाब में उतार दे। जब मैं तालाब
में जाने को होता हूँ,
सदा कोई दूसरा आदमी मुझसे पहले उसमें उतर
जाता है।”

8यीशु ने उससे कहा, “खड़ा हो, अपना बिस्तर उठा
और चल पड़।” 9वह आदमी तत्काल अच्छा हो गया।
उसने अपना बिस्तर उठाया और चल दिया। उस दिन
सब्त का दिन था 10इस पर यहूदियों ने उससे, जो निरोग
हुआ था, कहना शुरू किया, “आज सब्त का दिन है
और हमारे नियमों के यह विरुद्ध है कि तू अपना
बिस्तर उठाए।”

11इस पर उसने जवाब दिया, “जिसने मुझे अच्छा
किया है उसने कहा है कि अपना बिस्तर उठा और
चल।”

12उन लोगों ने उससे पूछा, “वह कौन व्यक्ति है
जिसने तुझसे कहा था, अपना बिस्तर उठा और चल?”

13पर वह व्यक्ति जो ठीक हुआ था, नहीं जानता था
कि वह कौन था क्योंकि उस जगह बहुत भीड़ थी और
यीशु वहाँ से चुपचाप चला गया था।

14इसके बाद यीशु ने उस व्यक्ति को मंदिर में देखा
और उससे कहा, “देखो, अब तुम निरोग हो, इसलिये
पाप करना बन्द कर दो। नहीं तो कोई और बड़ा कष्ट
तुम पर आ सकता है।” फिर वह व्यक्ति चला गया।
15और यहूदियों से आकर उसने कहा कि उसे ठीक
करने वाला यीशु था।

16क्योंकि यीशु ने ऐसे काम सब्त के दिन किये थे
इसलिए यहूदियों ने उसे सताना शुरू कर दिया। 17यीशु
ने उन्हें उत्तर देते हुए कहा, “मेरा पिता कभी काम बंद
नहीं करता, इसीलिए मैं भी निरन्तर काम करता हूँ।”
इसलिये यहूदी उसे मार डालने का और अधिक
प्रयत्न करने लगे।
18न केवल इसलिये कि वह सब्त को तोड़ रहा था
बल्कि वह परमेश्वर को अपना पिता भी कहता था।
और इस तरह अपने आपको परमेश्वर के समान
ठहराता था।

यीशु की साक्षी

19उत्तर में यीशु ने उनसे कहा, “मैं तुम्हें सच्चाई
बताता हूँ, कि पुत्र स्वयं अपने आप कुछ नहीं कर
सकता है। वह केवल वही करता है जो पिता को करते
देखता है। पिता जो कुछ करता है पुत्र भी वैसे ही करता
है। 20पिता पुत्र को प्रेम करता है और वह सब कुछ उसे
दिखाता है, जो वह करता है। उन कामों से भी और
बड़ी–बड़ी बातें वह उसे दिखायेगा। तब तुम सब आश्चर्य
करोगे। 21जैसे पिता मृतकों को उठाकर उन्हें जीवन
देता है। 22पिता किसी का भी न्याय नहीं करता किन्तु
उसने न्याय करने का अधिकार बेटे को दे दिया है।
23जिससे सभी लोग पुत्र का आदर वैसे ही करें जैसे वे
पिता का करते हैं। जो व्यक्ति पुत्र का आदर नहीं करता
वह उस पिता का भी आदर नहीं करता जिसने उसे
भेजा है।

24“मैं तुम्हें सत्य बताता हूँ जो मेरे वचन को सुनता है
और उस पर विश्वास करता है जिसने मुझे भेजा है,
वह अनन्त जीवन पाता है। न्याय का दण्ड उस पर नहीं
पड़ेगा। इसके विपरीत वह मृत्यु से जीवन में प्रवेश पा
जाता है। 25मैं तुम्हें सत्य बताता हूँ कि वह समय आने
वाला है बल्कि आ ही चुका है–जब वे, जो मर चुके हैं,
परमेश्वर के पुत्र का वचन सुनेंगे और जो उसे सुनेंगे वे
जीवित हो जायेंगे क्योंकि जैसे पिता जीवन का स्रोत है
26वैसे ही उसने अपने पुत्र को भी जीवन का स्रोत
बनाया है। 27और उसने उसे न्याय करने का अधिकार
दिया है। क्योंकि वह मनुष्य का पुत्र है। 28इस पर
आश्चर्य मत करो कि वह समय आ रहा है जब वे सब
जो अपनी कब्रों में हैं, उसका वचन सुनेंगे 29और बाहर
आ जायेंगे। जिन्होंने अच्छे काम किये हैं वे पुनरुत्थान
पर जीवन पाएँगे पर जिन्होंने बुरे काम किये हैं उन्हें
पुनरुत्थान पर दण्ड दिया जायेगा।

यीशु का यहूदियों से कथन

30“मैं स्वयं अपने आपसे कुछ नहीं कर सकता। मैं
परमेश्वर से जो सुनता हूँ उसी के आधार पर न्याय
करता हूँ और मेरा न्याय उचित है क्योंकि मैं अपनी
इच्छा से कुछ नहीं करता बल्कि उसकी इच्छा से
करता हूँ जिसने मुझे भेजा है।

31“यदि मैं अपनी तरफ से साक्षी दूँ तो मेरी साक्षी
सत्य नहीं है। 32मेरी ओर से साक्षी देने वाला एक और
है। और मैं जानता हूँ कि मेरी ओर से जो साक्षी वह देता
है, सत्य है।

पद 3-4 कुछ यूनानी प्रतियों में यह भाग जोड़ा गया है। “लोग पानी के हिलने की प्रतिक्षा मे थे। 4कभी कभी प्रभु का दूत जलाशय पर उतरता और जल को हिलाता। स्वर्गदूत के ऐसा करने पर जलाशय में जाने वाला पहला व्यक्ति अपने सभी रोगों से छुटकारा पा जाता।”

33"तुमने लोगों को यूहन्ना के पास भेजा और उसने
सत्य की साक्षी दी। 34मैं मनुष्य की साक्षी पर निर्भर
नहीं करता बल्कि यह मैं इसलिए कहता हूँ जिससे
तुम्हारा उद्धार हो सके। 35यूहन्ना उस दीपक की तरह
था जो जलता है और प्रकाश देता है। और तुम कुछ
समय के लिए उसके प्रकाश का आनन्द लेना चाहते
थे।

36"पर मेरी साक्षी यूहन्ना की साक्षी से बड़ी है क्योंकि
परम पिता ने जो काम पूरा करने के लिए मुझे सौंपा है,
मैं उन्हीं कामों को कर रहा हूँ और वे काम ही मेरी
साक्षी हैं कि परम पिता ने मुझे भेजा है। 37परम पिता ने
जिसने मुझे भेजा है, मेरी साक्षी दी है। तुम लोगों ने
उसका वचन कभी नहीं सुना और न तुमने उसका रूप
देखा है। 38और न ही तुम अपने भीतर उसका संदेश
धारण करते हो। क्योंकि तुम उसमें विश्वास नहीं रखते
हो जिसे परम पिता ने भेजा है। 39तुम शास्त्रों का अध्ययन
करते हो क्योंकि तुम्हारा विचार है कि तुम्हें उनके
द्वारा अनन्त जीवन प्राप्त होगा। किन्तु ये सभी शास्त्र
मेरी ही साक्षी देते हैं। 40फिर भी तुम जीवन प्राप्त करने
के लिये मेरे पास नहीं आना चाहते। 41"मैं मनुष्य द्वारा
की गयी प्रशंसा पर निर्भर नहीं करता। 42किन्तु मैं
जानता हूँ कि तुम्हारे भीतर परमेश्वर का प्रेम नहीं है।
43मैं अपने पिता के नाम से आया हूँ फिर भी तुम मुझे
स्वीकार नहीं करते किन्तु यदि कोई और अपने ही
नाम से आए तो तुम उसे स्वीकार कर लोगे। 44तुम
मुझमें विश्वास कैसे कर सकते हो, क्योंकि तुम तो
आपस में एक दूसरे से प्रशंसा स्वीकार करते हो। उस
प्रशंसा की तरफ देखते तक नहीं जो एकमात्र परमेश्वर
से आती है। 45ऐसा मत सोचो कि मैं परम पिता के आगे
तुम्हें दोषी ठहराऊँगा। जो तुम्हें दोषी सिद्ध करेगा वह तो
मूसा होगा जिस पर तुमने अपनी आशाएँ टिकाई हुई हैं।
यदि तुम वास्तव में मूसा में विश्वास करते 46तो तुम
मुझ में भी विश्वास करते क्योंकि उसने मेरे बारे में
लिखा है। 47जब तुम, जो उसने लिखा है उसी में विश्वास
नहीं करते, तो मेरे वचन में विश्वास कैसे करोगे?"

पाँच हजार से अधिक को भोजन

(मत्ती 14:13-21; मरकुस 6:30-44; लूका 9:10-17)

6 इसके बाद यीशु गलील की झील यानी तिबिरियास
के उस पार चला गया। 2और उसके पीछे–पीछे
एक अपार भीड़ चल दी क्योंकि उन्होंने रोगियों को
स्वास्थ्य प्रदान करने में अद्‌भुत चिह्न देखे थे। 3यीशु
पहाड़ पर चला गया और वहाँ अपने अनुयायियों के
साथ बैठ गया। 4यहूदियों का फ़सह पर्व निकट था।

5जब यीशु ने आँख उठाई और देखा कि एक विशाल
भीड़ उसकी तरफ़ आ रही है तो उसने फिलिप्पुस से
पूछा, "इन सब लोगों को भोजन कराने के लिए रोटी
कहाँ से खरीदी जा सकती है?" 6(यीशु ने यह बात
उसकी परीक्षा लेने के लिए कही थी क्योंकि वह तो
जानता ही था कि वह क्या करने जा रहा है।)

7फिलिप्पुस ने उत्तर दिया, "दो सौ चाँदी के सिक्कों से
भी इतनी रोटियाँ नहीं ख़रीदी जा सकती हैं जिनमें से
हर आदमी को एक निवाले से थोड़ा भी ज़्यादा मिल
सके। 8यीशु के एक दूसरे शिष्य शमौन पतरस के भाई
अन्द्रियास ने कहा, 9यहाँ एक छोटे लड़के के पास पाँच
जौ की रोटियाँ और दो मछलियाँ हैं पर इतने सारे लोगों
में इतने से क्या होगा।"

10यीशु ने उत्तर दिया, "लोगों को बैठाओ।" उस स्थान
पर अच्छी खासी घास थी इसलिये लोग वहाँ बैठ गये। ये
लोग लगभग पाँच हजार पुरुष थे 11फिर यीशु ने रोटियाँ
लीं और धन्यवाद देने के बाद जो वहाँ बैठे थे उनको
परोस दीं। इसी तरह जितनी वे चाहते थे, उतनी मछलियाँ
भी उन्हें दे दीं। 12जब उन के पेट भर गये यीशु ने अपने
शिष्यों से कहा, "जो टुकड़े बचे हैं, उन्हें इकट्ठा कर लो
ताकि कुछ बेकार न जाये।"

13फिर शिष्यों ने लोगों को परोसी गयी जौ की उन
पाँच रोटियों के बचे हुए टुकड़ों से बारह टोकरियाँ भरीं।

14यीशु के इस आश्चर्यकर्म को देखकर लोग कहने
लगे, "निश्चय ही यह व्यक्ति वही नबी है जिसे इस जगत्
में आना है।" 15यीशु यह जानकर कि वे लोग आने
वाले हैं और उसे ले जाकर राजा बनाना चाहते हैं,
अकेला ही पर्वत पर चला गया।

यीशु का पानी पर चलना

(मत्ती 14:22-27; मरकुस 6:45-52)

16जब शाम हुई उसके शिष्य झील पर गये 17और
एक नाव में बैठकर वापस झील के पार कफरनहूम
की तरफ़ चल पड़े। अँधेरा काफ़ी हो चला था किन्तु
यीशु अभी भी उनके पास नहीं लौटा था। 18तूफ़ानी हवा
के कारण झील में लहरें तेज़ होने लगी थीं। 19जब वे
कोई पाँच–छः किलोमीटर आगे निकल गये, उन्होंने
देखा कि यीशु झील पर चल रहा है और नाव के पास
आ रहा है। इससे वे डर गये। 20किन्तु यीशु ने उनसे
कहा, "यह मैं हूँ, डरो मत।" 21फिर उन्होंने तत्परता से
उसे नाव में चढ़ा लिया। और नाव शीघ्र ही वहाँ पहुँच
गयी जहाँ उन्हें जाना था।

यीशु की ढूँढ

22अगले दिन लोगों की उस भीड़ ने जो झील के उस
पार रह गयी थी, देखा कि वहाँ सिर्फ़ एक नाव थी और
अपने चेलों के साथ यीशु उस पर सवार नहीं हुआ था,
बल्कि उसके शिष्य ही अकेले रवाना हुए थे।
23तिबिरियास की कुछ नावें उस स्थान के पास आकर
रुकीं, जहाँ उन्होंने प्रभु के धन्यवाद देने के बाद रोटी

खायी थी। 24इस तरह जब उस भीड़ ने देखा कि न तो
वहाँ यीशु है और न ही उसके शिष्य तो वे नावों पर
सवार हो गये और यीशु को ढूँढते हुए कफरनहूम की
तरफ चल पड़े।

25जब उन्होंने यीशु को झील के उस पार पाया तो
उससे कहा, "हे रब्बी, तू यहाँ कब आया?" 26उत्तर में
यीशु ने उनसे कहा, "मैं तुम्हें सत्य बताता हूँ, तुम मुझे
इसलिये नहीं खोज रहे हो कि तुमने आश्चर्यपूर्ण चिह्न
देखे हैं बल्कि इसलिए कि तुमने भर पेट रोटी खायी
थी। 27उस खाने के लिये परिश्रम मत करो जो सड़
जाता है बल्कि उसके लिये जतन करो जो सदा उत्तम
बना रहता है और अनन्त जीवन देता है, जिसे तुम्हें
मानव-पुत्र देगा। क्योंकि परमपिता परमेश्वर ने अपनी
मोहर उसी पर लगायी है।"

28लोगों ने उससे पूछा, "जिन कामों को परमेश्वर
चाहता है, उन्हें करने के लिए हम क्या करें?"

29उत्तर में यीशु ने उनसे कहा, "परमेश्वर जो चाहता
है, वह यह है कि जिसे उसने भेजा है उस पर विश्वास
करो।"

30लोगों ने पूछा, "तू कौन से आश्चर्य चिन्ह प्रकट
करेगा जिन्हें हम देखें और तुझमें विश्वास करें? तू क्या
कार्य करेगा? 31हमारे पूर्वजों ने रेगिस्तान में मन्ना
खाया था जैसा कि पवित्र शास्त्रों में लिखा है। उसने
उन्हें खाने के लिए, स्वर्ग से रोटी दी।"

32इस पर यीशु ने उनसे कहा, "मैं तुम्हें सत्य बताता
हूँ वह मूसा नहीं था जिसने तुम्हें खाने के लिए स्वर्ग से
रोटी दी थी बल्कि यह मेरा पिता है जो तुम्हें स्वर्ग से
सच्ची रोटी देता है। 33वह रोटी जिसे परम पिता देता है
वह स्वर्ग से उतरी है और जगत को जीवन देती है।"

34लोगों ने उससे कहा, "हे प्रभु, अब हमें वह रोटी दे
और सदा देता रह।"

35यीशु ने उनसे कहा, "मैं ही वह रोटी हूँ जो जीवन
देती है। जो मेरे पास आता है वह कभी भूखा नहीं रहेगा
और जो मुझमें विश्वास करता है कभी भी प्यासा नहीं
रहेगा। 36मैं तुम्हें पहले ही बता चुका हूँ कि तुमने मुझे
देख लिया है, फिर भी तुम मुझमें विश्वास नहीं करते।
हर वह व्यक्ति जिसे परम पिता ने मुझे सौंपा है, मेरे पास
आयेगा 37जो मेरे पास आता है, मैं उसे कभी नहीं
लौटाऊँगा। 38क्योंकि मैं स्वर्ग से अपनी इच्छा के अनुसार
काम करने नहीं आया हूँ बल्कि उसकी इच्छा पूरी
करने आया हूँ जिसने मुझे भेजा है। 39और मुझे भेजने
वाले की यही इच्छा है कि मैं जिनको परमेश्वर ने मुझे
सौंपा है, उनमें से किसी को भी न खोऊँ और अन्तिम
दिन उन सबको जिला दूँ। 40यही मेरे परम पिता की
इच्छा है कि हर वह व्यक्ति जो पुत्र को देखता है और
उसमें विश्वास करता है, अनन्त जीवन पाये और अंतिम
दिन मैं उसे जिला उठाऊँगा।"

41इस पर यहूदियों ने यीशु पर बड़बड़ाना शुरू किया
क्योंकि वह कहता था, "वह रोटी मैं हूँ जो स्वर्ग से
उतरी है।"

42और उन्होंने कहा, "क्या यह यूसुफ का बेटा यीशु
नहीं है, क्या हम इसके माता-पिता को नहीं जानते हैं।
फिर यह कैसे कह सकता है यह स्वर्ग से उतरा है?"

43उत्तर में उनसे यीशु ने कहा, "आपस में बड़बड़ाना
बंद करो, 44मेरे पास तब तक कोई नहीं आ सकता जब
तक मुझे भेजने वाला परम पिता उसे मेरे प्रति आकर्षित
न करे। मैं अंतिम दिन उसे पुनर्जीवित करूँगा। 45नबियों
ने लिखा है, 'और वे सब परमेश्वर के द्वारा सिखाए हुए
होंगे।' हर वह व्यक्ति जो परम पिता की सुनता है और
उससे सीखता है मेरे पास आता है। 46(किन्तु वास्तव में
परम पिता को सिवाय उसके जिसे उसने भेजा है, किसी
ने नहीं देखा। परम पिता को बस उसी ने देखा है।) 47मैं
तुम्हें सत्य कहता हूँ, जो विश्वासी है, वह अनन्त जीवन
पाता है। 48मैं वह रोटी हूँ जो जीवन देती है। 49तुम्हारे
पुरखों ने रेगिस्तान में मन्ना खाया था तो भी वे मर गये।
50जबकि स्वर्ग से आयी इस रोटी को यदि कोई खाए तो
मरे नहीं। 51मैं ही वह जीवित रोटी हूँ जो स्वर्ग से उतरी
है। यदि कोई इस रोटी को खाता है तो वह अमर हो
जायेगा। और वह रोटी जिसे मैं दूँगा, मेरा शरीर है। इसी
से संसार जीवित रहेगा।"

52फिर यहूदी लोग आपस में यह कहते हुए बहस
करने लगे, "यह अपना शरीर हमें खाने को कैसे दे
सकता है?"

53इस पर यीशु ने उनसे कहा, "मैं तुम्हें सत्य बताता
हूँ जब तक तुम मनुष्य के पुत्र का शरीर नहीं खाओगे
और उसका लहू नहीं पिओगे तब तक तुममें जीवन
नहीं होगा। 54जो मेरा शरीर खाता रहेगा और मेरा लहू
पीता रहेगा, अनन्त जीवन उसी का है। अन्तिम दिन मैं
उसे फिर जीवित करूँगा। 55मेरा शरीर सच्चा भोजन है
और मेरा लहू ही सच्चा पेय है। 56जो मेरे शरीर को
खाता रहता है और लहू को पीता रहता है वह मुझ में
ही रहता है, और मैं उसमें। 57बिल्कुल वैसे ही जैसे
जीवित पिता ने मुझे भेजा है और मैं परम पिता के
कारण ही जीवित हूँ, उसी तरह वह जो मुझे खाता रहता
है मेरे ही कारण जीवित रहेगा। 58यही वह रोटी है जो
स्वर्ग से उतरी है। यह वैसी नहीं है जैसी हमारे पूर्वजों ने
खायी थी। और बाद में वे मर गये थे। जो इस रोटी को
खाता रहेगा, सदा के लिये जीवित रहेगा।"

59यीशु ने ये बातें कफरनहूम के आराधनालय में
उपदेश देते हुए कहीं।

अनन्त जीवन की शिक्षा

60यीशु के बहुत से अनुयायियों ने इन बातों को
सुनकर कहा, "यह शिक्षा बहुत कठिन है, इसे कौन

सुन सकता है?” 61यीशु को अपने आप ही पता चल
गया था कि उसके अनुयायियों को इसकी शिकायत है।
इसलिये वह उनसे बोला, “क्या तुम इस शिक्षा से परेशान
हो? 62यदि ऐसा है तो तुमको यदि मनुष्य के पुत्र को
जहाँ वह पहले था वहीं वापस लौटते देखना पड़े तो क्या
होगा? 63आत्मा ही है जो जीवन देता है। देह का कोई
उपयोग नहीं है। वचन, जो मैंने तुमसे कहे हैं, आत्मा है
और वे ही जीवन देते हैं। 64किन्तु तुममें कुछ ऐसे भी हैं
जो विश्वास नहीं करते।” (यीशु शुरू से ही जानता था
कि वे कौन हैं जो विश्वासी नहीं हैं और वह कौन है जो
उसे धोखा देगा।) 65यीशु ने आगे कहा, “इसीलिये मैंने
तुमसे कहा है कि मेरे पास तब तक कोई नहीं आ
सकता जब तक परम पिता उसे मेरे पास आने की
अनुमति नहीं दे देता।”

66इसी कारण यीशु के बहुत से अनुयायी वापस चले
गये। और फिर कभी उसके पीछे नहीं चले।

67फिर यीशु ने अपने बारह शिष्यों से कहा, “क्या
तुम भी चले जाना चाहते हो?”

68शमौन पतरस ने उत्तर दिया, “हे प्रभु, हम किसके
पास जायेंगे? वे वचन तो तेरे पास हैं जो अनन्त जीवन
देते हैं। 69अब हमने यह विश्वास कर लिया है और
जान लिया है कि तू ही वह पवित्रतम है जिसे परमेश्वर
ने भेजा है।”

70यीशु ने उन्हें उत्तर दिया, “क्या तुम बारहों को मैंने
नहीं चुना है? फिर भी तुममें से एक शैतान है।”

71वह शमौन इस्करियोती के बेटे यहूदा के बारे में
बात कर रहा था क्योंकि वह यीशु के खिलाफ़ होकर
उसे धोखा देने वाला था। यद्यपि वह भी उन बारह
शिष्यों में से ही एक था।

यीशु और उसके भाई

7 इसके बाद यीशु ने गलील की यात्रा की। वह
यहूदिया जाना चाहता था क्योंकि यहूदी उसे मार
डालना चाहते थे। 2यहूदियों का खेमों का पर्व* आने
वाला था। 3इसलिये यीशु के बंधुओं ने उससे कहा,
“तुम्हें यह स्थान छोड़कर यहूदिया चले जाना चाहिये।
ताकि तुम्हारे अनुयायी तुम्हारे कामों को देख सकें।
4कोई भी वह व्यक्ति जो लोगों में प्रसिद्ध होना चाहता है
अपने कामों को छिपा कर नहीं करता। क्योंकि तुम
आश्चर्य कर्म करते हो इसलिये सारे जगत के सामने
अपने को प्रकट करो।” 5(यीशु के भाई तक उसमें
विश्वास नहीं रखते थे।) 6यीशु ने उनसे कहा, “मेरे
लिये अभी ठीक समय नहीं आया है। पर तुम्हारे लिये
हर समय ठीक है। 7यह जगत तुमसे घृणा नहीं कर
सकता पर मुझसे घृणा करता है। क्योंकि मैं यह कहता
रहता हूँ कि इसकी करनी बुरी है। 8इस पर्व में तुम लोग
जाओ, मैं नहीं जा रहा क्योंकि मेरे लिए अभी ठीक
समय नहीं आया है।” 9ऐसा कहने के बाद यीशु गलील
में रुक गया।

10जब उसके भाई पर्व में चले गये तो वह भी गया।
पर वह खुले तौर पर नहीं, छिप कर गया था। 11यहूदी
नेता उसे पर्व में यह कहते खोज रहे थे, “वह मनुष्य
कहाँ है?”

12यीशु के बारे में छिपे-छिपे उस भीड़ में तरह-तरह
की बातें हो रही थीं। कुछ कह रहे थे, “वह अच्छा
व्यक्ति है।” पर दूसरों ने कहा, “नहीं, वह लोगों को
भटकाता है।” 13कोई भी उसके बारे में खुलकर बातें
नहीं कर पा रहा था क्योंकि वे लोग यहूदी नेताओं से
डरते थे।

यरुशलेम में यीशु का उपदेश

14जब वह पर्व लगभग आधा बीत चुका था, यीशु
मंदिर में गया और उसने उपदेश देना शुरू किया।
15यहूदी नेताओं ने अचरज के साथ कहा, “यह मनुष्य
जो कभी किसी पाठशाला में नहीं गया फिर इतना कुछ
कैसे जानता है?”

16उत्तर देते हुए यीशु ने उनसे कहा, “जो उपदेश मैं
देता हूँ मेरा अपना नहीं है बल्कि उससे आता है, जिसने
मुझे भेजा है। 17यदि मनुष्य वह करना चाहे, जो परम
पिता की इच्छा है तो वह यह जान जायेगा कि जो
उपदेश मैं देता हूँ वह उसका है या मैं अपनी ओर से दे
रहा हूँ। 18जो अपनी ओर से बोलता है, वह अपने लिये
यश कमाना चाहता है; किन्तु वह जो उसे यश देने का
प्रयत्न करता है, जिसने उसे भेजा है, वही व्यक्ति सच्चा
है। उसमें कहीं कोई खोट नहीं है। 19क्या तुम्हें मूसा ने
व्यवस्था का विधान नहीं दिया? पर तुममें से कोई भी
उसका पालन नहीं करता। तुम मुझे मारने का प्रयत्न
क्यों करते हो?” 20लोगों ने जवाब दिया, “तुझ पर भूत
सवार है जो तुझे मारने का यत्न कर रहा है।”

21उत्तर में यीशु ने उनसे कहा, “मैंने एक आश्चर्यकर्म
किया और तुम सब चकित हो गये। 22इसी कारण मूसा
ने तुम्हें ख़तना का नियम दिया था। (यह नियम मूसा
का नहीं था बल्कि तुम्हारे पूर्वजों से चला आ रहा था।)
और तुम सब्त के दिन लड़कों का ख़तना करते हो।
23यदि सब्त के दिन किसी का ख़तना इसलिये किया
जाता है कि मूसा का विधान न टूटे तो इसके लिये तुम
मुझ पर क्रोध क्यों करते हो कि मैंने सब्त के दिन एक
व्यक्ति को पूरी तरह चंगा कर दिया? 24बातें जैसी दिखती
हैं, उसी आधार पर उनका न्याय मत करो बल्कि जो
वास्तव में उचित है उसी के आधार पर न्याय करो।”

खेमों का पर्व यह पर्व हर साल हफ्ते भर मनाया जाता था, जब यहूदी लोग तम्बुओं में रहकर उन दिनों की याद करते थे जब मूसा के काल में उनके पूर्वज चालीस साल तक मरुभूमि में भटकते रहे थे।

क्या यीशु ही मसीह है?

25फिर यरूशलेम में रहने वाले लोगों में से कुछ ने कहा, "क्या यही वह व्यक्ति नहीं है जिसे वे लोग मार डालना चाहते हैं? 26मगर देखो वह सब लोगों के बीच में बोल रहा है और वे लोग कुछ भी नहीं कह रहे हैं। क्या यह नहीं हो सकता कि यहूदी नेता वास्तव में जान गये हैं कि वही मसीह है। 27खैर हम जानते हैं कि यह व्यक्ति कहाँ से आया है। जब वास्तविक मसीह आयेगा तो कोई नहीं जान पायेगा कि वह कहाँ से आया।"

28यीशु जब मंदिर में उपदेश दे रहा था, उसने ऊँचे स्वर में कहा, "तुम मुझे जानते हो और यह भी जानते हो मैं कहाँ से आया हूँ। फिर भी मैं अपनी ओर से नहीं आया। जिसने मुझे भेजा है, वह सत्य है, तुम उसे नहीं जानते। 29पर मैं उसे जानता हूँ क्योंकि मैं उसी से आया हूँ। 30फिर वे उसे बंदी बनाने का जतन करने लगे पर कोई भी उस पर हाथ नहीं डाल सका क्योंकि उसका समय अभी नहीं आया था। 31तो भी बहुत से लोग उसमें विश्वासी हो गये और कहने लगे, "जब मसीह आयेगा तो वह जितने आश्चर्य चिन्ह इस व्यक्ति ने प्रकट किये हैं उनसे अधिक नहीं करेगा। क्या वह ऐसा करेगा?"

यहूदियों का यीशु को बंदी बनाने का यत्न

32भीड़ में लोग यीशु के बारे में चुपके–चुपके क्या बात कर रहे हैं, फरीसियों ने सुना और प्रमुख धर्माधिकारियों तथा फरीसियों ने उसे बंदी बनाने के लिए मंदिर के सिपाहियों को भेजा फिर यीशु बोला, 33"मैं तुम लोगों के साथ कुछ समय और रहूँगा और फिर उसके पास वापस चला जाऊँगा जिसने मुझे भेजा है। 34तुम मुझे ढूँढोगे पर तुम मुझे पाओगे नहीं। क्योंकि तुम लोग वहाँ जा नहीं पाओगे जहाँ मैं होऊँगा।"

35इसके बाद यहूदी नेता आपस में बात करने लगे, "यह कहाँ जाने वाला है जहाँ हम इसे नहीं ढूँढ पायेंगे। शायद यह वहीं तो नहीं जा रहा है जहाँ हमारे लोग यूनानी नगरों में तितर–बितर हो कर रहते हैं। क्या यह यूनानियों में उपदेश देगा? 36जो इसने कहा है उसका अर्थ क्या है? कि तुम मुझे ढूँढोगे पर मुझे पाओगे नहीं। और जहाँ मैं होऊँगा वहाँ तुम नहीं आ सकते।"

यीशु द्वारा पवित्र आत्मा का उपदेश

37पर्व के अन्तिम और महत्त्वपूर्ण दिन यीशु खड़ा हुआ और उसने ऊँचे स्वर में कहा, "अगर कोई प्यासा है तो मेरे पास आये और पिये। 38जो मुझमें विश्वासी है, जैसा कि शास्त्र कहते हैं उसके अंतरात्मा से स्वच्छ जीवन जल की नदियाँ फूट पड़ेंगी।" 39यीशु ने यह आत्मा के विषय में कहा था। जिसे वे लोग पायेंगे जो उसमें विश्वास करेंगे वह आत्मा अभी तक दी नहीं गयी है क्योंकि यीशु अभी तक महिमावान नहीं हुआ।

यीशु के बारे में लोगों की बातचीत

40भीड़ के कुछ लोगों नें जब यह सुना वे कहने लगे, "यह आदमी निश्चय ही वही नबी है।"

41कुछ और लोग कह रहे थे, "यही व्यक्ति मसीह है।" कुछ और लोग कह रहे थे, "मसीह गलील से नहीं आयेगा। क्या ऐसा हो सकता है? 42क्या शास्त्रों में नहीं लिखा है कि मसीह दाऊद की संतान होगा और बैतलहम से आयेगा जिस नगर में दाऊद रहता था।" 43इस तरह लोगों में फूट पड़ गयी। 44कुछ उसे बंदी बनाना चाहते थे पर किसी ने भी उस पर हाथ नहीं डाला।

यहूदी नेताओं का यीशु में अविश्वास

45इसलिये मन्दिर के सिपाही प्रमुख धर्माधिकारियों और फरीसियों के पास लौट आये। इस पर उनसे पूछा गया, "तुम उसे पकड़कर क्यों नहीं लाये?"

46सिपाहियों नें जवाब दिया, "कोई भी व्यक्ति आज तक ऐसे नहीं बोला जैसे वह बोलता है।"

47इस पर फरीसियों ने उनसे कहा, "क्या तुम भी तो नहीं भरमाए गये हो? 48किसी भी यहूदी नेता या फरीसियों नें उसमें विश्वास नहीं किया है। 49किन्तु ये लोग जिन्हें व्यवस्था के विधान का ज्ञान नहीं है परमेश्वर के अभिशाप के पात्र हैं।"

50नीकुदेमुस ने उनसे कहा, यह वही था जो पहले यीशु के पास गया था यह उन फरीसियों में से ही एक था 51"हमारी व्यवस्था का विधान किसी को तब तक दोषी नहीं ठहराता जब तक उसकी सुन नहीं लेता और यह पता नहीं लगा लेता कि उसने क्या किया है।"

52उत्तर में उन्होंने उससे कहा, "क्या तू भी तो गलील का ही नहीं है? शास्त्रों को पढ़ तो तुझे पता चलेगा कि गलील से कोई नबी कभी नहीं आयेगा।"

[कुछ प्राचीन यूनानी प्रतियों में यूहन्ना 7:53–8:11 तक का पद नहीं है।]

दुराचारी स्त्री को क्षमा

53फिर वे सब वहाँ से अपने–अपने घर चले गये।

8 और यीशु जैतून पर्वत पर चला गया। 2अलख सवेरे वह फिर मन्दिर में गया। सभी लोग उसके पास आये। यीशु बैठकर उन्हें उपदेश देने लगा। 3तभी यहूदी धर्मशास्त्री और फरीसी लोग व्यभिचार के अपराध में एक स्त्री को वहाँ पकड़ लाये। और उसे लोगों के सामने खड़ा कर दिया। 4और यीशु से बोले, "हे गुरु, यह स्त्री व्यभिचार करते रंगे हाथों पकड़ी गयी है। 5मूसा का विधान हमें आज्ञा देता है कि ऐसी स्त्री को पत्थर मारना चाहियें। अब बता तेरा क्या कहना है?" 6(यीशु को जाँचने के लिये वे यह पूछ रहे थे ताकि उन्हें कोई ऐसा बहाना मिल जाये जिससे उसके विरुद्ध कोई अभियोग

लगाया जा सके)। किन्तु यीशु नीचे झुका और अपनी
उँगली से धरती पर लिखने लगा। 7क्योंकि वे पूछते ही
जा रहे थे इसलिये यीशु सीधा तन कर खड़ा हो गया
और उनसे बोला, "तुम में से जो पापी नहीं है वही सबसे
पहले इस औरत को पत्थर मारे।" 8और वह फिर
झुककर धरती पर लिखने लगा।

9जब लोगों ने यह सुना तो सबसे पहले बूढ़े लोग और
फिर और भी एक-एक करके वहाँ से खिसकने लगे
और इस तरह वहाँ अकेला यीशु ही रह गया। यीशु के
सामने वह स्त्री अब भी खड़ी थी। 10यीशु खड़ा हुआ
और उस स्त्री से बोला, "हे स्त्री, वे सब कहाँ गये। क्या
तुम्हें किसी ने दोषी नहीं ठहराया?"

11स्त्री बोली, "नहीं, महोदय! किसी ने नहीं।"

यीशु ने कहा, "मैं भी तुम्हें दण्ड नहीं दूँगा। जाओ
और अब फिर कभी पाप मत करना।"

जगत का प्रकाश यीशु

12फिर वहाँ उपस्थित लोगों से यीशु ने कहा, "मैं
जगत का प्रकाश हूँ जो मेरे पीछे चलेगा कभी अँधेरे में
नहीं रहेगा। बल्कि उसे उस प्रकाश की प्राप्ति होगी जो
जीवन देता है।"

13इस पर फरीसी उससे बोले, "तू अपनी साक्षी अपने
आप दे रहा है, इसलिये तेरी साक्षी उचित नहीं है।"

14उत्तर में यीशु ने उनसे कहा, "यदि मैं अपनी साक्षी
स्वयं अपनी तरफ से दे रहा हूँ तो भी मेरी साक्षी उचित
है क्योंकि मैं यह जानता हूँ कि मैं कहाँ से आया हूँ और
कहाँ जा रहा हूँ। किन्तु तुम लोग यह नहीं जानते कि मैं
कहाँ से आया हूँ और कहाँ जा रहा हूँ। 15तुम लोग
इंसानी सिद्धान्तों पर न्याय करते हो, मैं किसी का न्याय
नहीं करता। 16किन्तु यदि मैं न्याय करूँ भी तो मेरा
न्याय उचित होगा। क्योंकि मैं अकेला नहीं हूँ बल्कि
परम पिता, जिसने मुझे भेजा है वह और मैं मिलकर
न्याय करते हैं। 17तुम्हारे विधान में लिखा है कि दो
व्यक्तियों की साक्षी न्याय संगत है। 18मैं अपनी साक्षी
स्वयं देता हूँ और परम पिता भी, जिसने मुझे भेजा है,
मेरी ओर से साक्षी देता है।" 19इस पर लोगों ने उससे
कहा, "तेरा पिता कहाँ है?" यीशु ने उत्तर दिया, "न तो
तुम मुझे जानते हो, और न मेरे पिता को। यदि तुम मुझे
जानते, तो मेरे पिता को भी जान लेते।"

20मन्दिर में उपदेश देते हुए, भेंट-पात्रों के पास से
उसने ये शब्द कहे थे। किन्तु किसी ने भी उसे बंदी नहीं
बनाया क्योंकि उसका समय अभी नहीं आया था।

यहूदियों का यीशु के विषय में अज्ञान

21यीशु ने उनसे एक बार फिर कहा, "मैं चला जाऊँगा
और तुम लोग मुझे ढूँढोगे। पर तुम अपने ही पापों में मर
जाओगे। जहाँ मैं जा रहा हूँ तुम वहाँ नहीं आ सकते।"

22फिर यहूदी नेता कहने लगे, "क्या तुम सोचते हो
कि वह आत्महत्या करने वाला है? क्योंकि उसने कहा
है तुम वहाँ नहीं आ सकते जहाँ मैं जा रहा हूँ।"

23इस पर यीशु ने उनसे कहा, "तुम नीचे के हो और
मैं ऊपर से आया हूँ तुम सांसारिक हो और मैं इस जगत
से नहीं हूँ, 24इसलिये मैंने तुमसे कहा था कि तुम अपने
पापों में मरोगे। यदि तुम विश्वास नहीं करते कि वह मैं
हूँ। तुम अपने पापों में मरोगे।"

25फिर उन्होंने यीशु से पूछा, "तू कौन है?"

यीशु ने उन्हें उत्तर दिया, "मैं वही हूँ जैसा कि प्रारम्भ
से ही मैं तुमसे कहता आ रहा हूँ। 26तुमसे कहने को
और तुम्हारा न्याय करने को मेरे पास बहुत कुछ है।
पर सत्य वही है जिसने मुझे भेजा है। मैं वही कहता हूँ
जो मैंने उससे सुना है।"

27वे यह नहीं जान पाये कि यीशु उन्हें परम पिता के
बारे में बता रहा है। 28फिर यीशु ने उनसे कहा, "जब
तुम मनुष्य के पुत्र को ऊँचा उठा लोगे तब तुम जानोगे
कि वह मैं हूँ। मैं अपनी ओर से कुछ नहीं करता। मैं
यह जो कह रहा हूँ, वही है जो मुझे परम पिता ने
सिखाया है। 29और वह जिसने मुझे भेजा है, मेरे साथ
है। उसने मुझे कभी अकेला नहीं छोड़ा क्योंकि मैं सदा
वही करता हूँ जो उसे भाता है।" 30यीशु जब ये बातें
कह रहा था, तो बहुत से लोग उसके विश्वासी हो गये।

पाप से छुटकारे का उपदेश

31सो यीशु उन यहूदी नेताओं से कहने लगा जो उसमें
विश्वास करते थे, "यदि तुम लोग मेरे उपदेशों पर
चलोगे तो तुम वास्तव में मेरे अनुयायी बनोगे। 32और
सत्य को जान लोगे। और सत्य तुम्हें मुक्त करेगा।"

33इस पर उन्होंने यीशु से प्रश्न किया, "हम इब्राहीम
के वंशज हैं और हमने कभी किसी की दासता नहीं
की। फिर तुम कैसे कहते हो कि तुम मुक्त हो जाओगे।"

34यीशु ने उत्तर देते हुए कहा, "मैं तुमसे सत्य कहता
हूँ। हर वह जो पाप करता रहता है, पाप का दास है।
35और कोई दास सदा परिवार के साथ नहीं रह सकता।
केवल पुत्र ही सदा साथ रह सकता है। 36अत: यदि पुत्र
तुम्हें मुक्त करता है तभी तुम वास्तव में मुक्त होगे। मैं
जानता हूँ तुम इब्राहीम के वंश से हो। 37पर तुम मुझे
मार डालने का यत्न कर रहे हो। क्योंकि मेरे उपदेशों
के लिये तुम्हारे मन में कोई स्थान नहीं है। 38मैं वही
कहता हूँ जो मुझे मेरे पिता ने दिखाया है और तुम वह
करते हो जो तुम्हारे पिता से तुमने सुना है।"

39इस पर उन्होंने यीशु को उत्तर दिया, "हमारे पिता
इब्राहीम हैं।" यीशु ने कहा, "यदि तुम इब्राहीम की
संतान होते तो तुम वही काम करते जो इब्राहीम ने किये
थे। 40पर तुम तो अब मुझे यानी एक ऐसे मनुष्य को, जो
तुमसे उस सत्य को कहता है जिसे उसने परमेश्वर से

सुना है, मार डालना चाहते हो। इब्राहीम ने तो ऐसा नहीं किया। 41तुम अपने पिता के कार्य करते हो।"

फिर उन्होंने यीशु से कहा, "हम व्यभिचार के परिणाम स्वरूप पैदा नहीं हुए हैं। हमारा केवल एक पिता है और वह है परमेश्वर।"

42यीशु ने उन्हें उत्तर दिया, "यदि परमेश्वर तुम्हारा पिता होता तो तुम मुझे प्यार करते क्योंकि मैं परमेश्वर में से ही आया हूँ। और अब मैं यहाँ हूँ। मैं अपने आप से नहीं आया हूँ। बल्कि मुझे उसने भेजा है। 43मैं जो कह रहा हूँ उसे तुम समझते क्यों नहीं? इसका कारण यही है कि तुम मेरा संदेश नहीं सुनते। 44तुम अपने पिता शैतान की संतान हो। और तुम अपने पिता की इच्छा पर चलना चाहते हो। वह प्रारम्भ से ही एक हत्यारा था। और उसने सत्य का पक्ष कभी नहीं लिया। क्योंकि उसमें सत्य का कोई अंश तक नहीं है। जब वह झूठ बोलता है तो सहज भाव से बोलता है क्योंकि वह झूठा है और सभी झूठों को जन्म देता है। 45पर क्योंकि मैं सत्य कह रहा हूँ, तुम लोग मुझमें विश्वास नहीं करोगे। 46तुममें से कौन मुझ पर पापी होने का लांछन लगा सकता है। यदि मैं सत्य कहता हूँ, तो तुम मेरा विश्वास क्यों नहीं करते? 47वह व्यक्ति जो परमेश्वर का है, परमेश्वर के वचनों को सुनता है। इसी कारण तुम मेरी बात नहीं सुनते कि तुम परमेश्वर के नहीं हो।"

अपने और इब्राहीम के विषय में यीशु का कथन

48उत्तर में यहूदियों ने उससे कहा, "यह कहते हुए क्या हम सही नहीं थे कि तू सामरी है और तुझ पर कोई दुष्टात्मा सवार है?"

49यीशु ने उत्तर दिया, "मुझ पर कोई दुष्टात्मा नहीं है। बल्कि मैं तो अपने परम पिता का आदर करता हूँ और तुम मेरा अपमान करते हो। 50मैं अपनी महिमा नहीं चाहता हूँ पर एक ऐसा है जो मेरी महिमा चाहता है और न्याय भी करता है। 51मैं तुम्हें सत्य कहता हूँ यदि कोई मेरे उपदेशों को धारण करेगा तो वह मौत को कभी नहीं देखेगा।"

52इस पर यहूदी नेताओं ने उससे कहा, "अब हम यह जान गये हैं कि तुम में कोई दुष्टात्मा समाया है। यहाँ तक कि इब्राहीम और नबी भी मर गये और तू कहता है यदि कोई मेरे उपदेश पर चले तो उसकी मौत कभी नहीं होगी। 53निश्चय ही तू हमारे पूर्वज इब्राहीम से बड़ा नहीं है जो मर गया। और नबी भी मर गये। फिर तू क्या सोचता है? तू है क्या?"

54यीशु ने उत्तर दिया, "यदि मैं अपनी महिमा करूँ तो वह महिमा मेरी कुछ भी नहीं है। जो मुझे महिमा देता है वह मेरा परम पिता है। जिसके बारे में तुम दावा करते हो कि वह तुम्हारा परमेश्वर है। 55तुमने उसे कभी नहीं जाना। पर मैं उसे जानता हूँ, यदि मैं यह कहूँ कि मैं उसे नहीं जानता तो मैं भी तुम लोगों की ही तरह झूठा ठहरूँगा। मैं उसे अच्छी तरह जानता हूँ, और जो वह कहता है उसका पालन करता हूँ। 56तुम्हारा पूर्वज यह जानकर कि वह उस दिन को देखेगा जब मैं आऊँगा आनन्द से भर गया था। उसने इसे देखा और प्रसन्न हुआ।"

57फिर यहूदी नेताओं ने उससे कहा, "तू अभी पचास बरस का भी नहीं है और तूने इब्राहीम को देख लिया।"

58यीशु ने इस पर उनसे कहा, "मैं तुम्हें सत्य कहता हूँ। इब्राहीम से पहले भी मैं हूँ।" 59इस पर उन्होंने यीशु पर मारने के लिये बड़े–बड़े पत्थर उठा लिये किन्तु यीशु छुपते–छिपाते मन्दिर से चला गया।

जन्म से अन्धे को दृष्टि–दान

9 जाते हुए उसने जन्म से अंधे एक व्यक्ति को देखा। 2इस पर यीशु के अनुयायियों ने उससे पूछा, "हे रब्बी, यह व्यक्ति अपने पापों से अंधा जन्मा है या अपने माता–पिता के?"

3यीशु ने उत्तर दिया, "न तो इसने पाप किए हैं और न इसके माता–पिता ने बल्कि यह इसलिये अंधा जन्मा है ताकि इसे अच्छा करके परमेश्वर की शक्ति दिखायी जा सके। 4उसके कामों को जिसने मुझे भेजा है, हमें निश्चित रूप से दिन रहते ही कर लेना चाहिये क्योंकि जब रात हो जायेगी कोई काम नहीं कर सकेगा। 5जब मैं जगत में हूँ मैं जगत की ज्योति हूँ।"

6इतना कहकर यीशु ने धरती पर थूका और उससे थोड़ी मिट्टी सानी उसे अंधे की आंखों पर मल दिया। 7और उससे कहा, "जा और शिलोह के तालाब में धो आ। (शीलोह यानी भेजा हुआ।) और फिर उस अंधे ने जाकर आँखें धो डालीं। जब वह लौटा तो उसे दिखाई दे रहा था। 8फिर उसके पड़ोसी और वे लोग जो उसे भीख माँगता देखने के आदी थे बोले, "क्या यह वही व्यक्ति नहीं है जो बैठा हुआ भीख माँगा करता था?"

9कुछ ने कहा, "यह वही है," दूसरो ने कहा, "नहीं, यह वह नहीं है, उसका जैसा दिखाई देता है।" इस पर अंधा कहने लगा, "मैं वही हूँ।"

10इस पर लोगों ने उससे पूछा, "तुझे आँखों की ज्योति कैसे मिली?" 11उसने जवाब दिया, "यीशु नाम के एक व्यक्ति ने मिट्टी सान कर मेरी आँखों पर मली और मुझसे कहा, जा और शीलोह में धो आ और मैं जाकर धो आया। बस मुझे आँखों की ज्योति मिल गयी।"

12फिर लोगों ने उससे पूछा, "वह कहाँ है?"

उसने जवाब दिया, "मुझे पता नहीं।"

दृष्टि–दान पर फरीसियों का विवाद

13उस व्यक्ति को जो पहले अंधा था, वे लोग फ़रीसियों के पास ले गये। 14यीशु ने जिस दिन मिट्टी सानकर उस

अंधे को आँखें दी थीं वह सब्त का दिन था। 15इस तरह
फरीसी उससे एक बार फिर पूछने लगे, “उसने आँखों
की ज्योति कैसे पायी?”

उसने बताया, “उसने मेरी आँखों पर गीली मिट्टी
लगायी, मैंने उसे धोया और अब मैं देख सकता हूँ।”

16कुछ फरीसी कहने लगे, “यह मनुष्य परमेश्वर की
ओर से नहीं है क्योंकि यह सब्त का पालन नहीं करता।”

उस पर दूसरे बोले, “कोई पापी आदमी भला ऐसे
आश्चर्य कर्म कैसे कर सकता है?” इस तरह उनमें
आपस में ही विवाद होने लगा।

17वे एक बार फिर उस अंधे से बोले, “उसके बारे में
तू क्या कहता है? क्योंकि इस तथ्य को तू जानता है कि
उसने तुझे आँखें दी हैं।”

तब उसने कहा, “वह नबी है।”

18यहूदी नेताओं ने उस समय तक उस पर विश्वास
नहीं किया कि वह व्यक्ति अंधा था और उसे आँखों की
ज्योति मिल गयी है। जब तक उसके माता–पिता को
बुलाकर 19उन्होंने यह नहीं पूछ लिया, “क्या यही तुम्हारा
पुत्र है जिसके बारे में तुम कहते हो कि वह अंधा था।
फिर यह कैसे हो सकता है कि वह अब देख सकता
है?”

20इस पर उसके माता पिता ने उत्तर देते हुए कहा,
“हम जानते हैं कि यह हमारा पुत्र है और यह अंधा
जन्मा था। 21पर हम यह नहीं जानते कि यह अब देख
कैसे सकता है? और न ही हम यह जानते हैं कि इसे
आँखों की ज्योति किसने दी है। इसी से पूछो, यह काफ़ी
बड़ा हो चुका है। अपने बारे में यह खुद बता सकता
है।”

22(उसके माता–पिता ने यह बात इसलिये कही थी
कि वे यहूदी नेताओं से डरते थे। क्योंकि वे इस पर
पहले ही सहमत हो चुके थे कि यदि कोई यीशु को
मसीह माने तो उसे आराधनालय से निकाल दिया जाये।
23इसलिये उसके माता–पिता ने कहा था, “वह काफ़ी
बड़ा हो चुका है, उससे पूछो।)”

24यहूदी नेताओं ने उस व्यक्ति को दूसरी बारी फिर
बुलाया जो अंधा था, और कहा, “सच कहो, और जो तू
ठीक हुआ है उसका सिला परमेश्वर को दे। हमें मालूम
है कि यह व्यक्ति पापी है।”

25इस पर उसने जवाब दिया, “मैं नहीं जानता कि वह
पापी है या नहीं, मैं तो बस यह जानता हूँ कि मैं अंधा
था, और अब देख सकता हूँ।”

26इस पर उन्होंने उससे पूछा, “उसने क्या किया?
तुझे उसने आँखें कैसे दीं?”

27इस पर उसने उन्हें जवाब देते हुए कहा, “मैं तुम्हें
बता तो चुका हूँ, पर तुम मेरी बात सुनते ही नहीं। तुम
वह सब कुछ फिर से क्यों सुनना चाहते हो? क्या तुम
भी उसके अनुयायी बनना चाहते हो?”

28इस पर उन्होंने उसका अपमान किया और कहा,
“तू उसका अनुयायी है पर हम मूसा के अनुयायी हैं।
29हम जानते हैं कि परमेश्वर ने मूसा से बात की थी
पर हम नहीं जानते कि यह आदमी कहाँ से आया है?”

30उत्तर देते हुए उस व्यक्ति ने उनसे कहा, “आश्चर्य
है तुम नहीं जानते कि वह कहाँ से आया है? पर मुझे
उसने आँखों की ज्योति दी है। 31हम जानते हैं कि
परमेश्वर पापियों की नहीं सुनता बल्कि वह तो उनकी
सुनता है जो समर्पित हैं और वही करते हैं जो परमेश्वर
की इच्छा है। 32कभी सुना नहीं गया कि किसी ने
किसी जन्म से अंधे व्यक्ति को आँखों की ज्योति दी हो।
33यदि यह व्यक्ति परमेश्वर की ओर से नहीं होता तो
यह कुछ नहीं कर सकता था।”

34उत्तर में उन्होंने कहा, “तू सदा से पापी रहा है।
ठीक तब से जबसे तू पैदा हुआ। और अब तू हमें पढ़ाने
चला है?” और इस तरह यहूदी नेताओं ने उसे वहाँ से
बाहर धकेल दिया।

आत्मिक अंधापन

35यीशु ने सुना कि यहूदी नेताओं ने उसे धकेल कर
बाहर निकाल दिया है तो उससे मिलकर उसने कहा,
“क्या तू मनुष्य के पुत्र में विश्वास करता है?” उत्तर में
वह व्यक्ति बोला

36“हे प्रभु, बताइये वह कौन है? ताकि मैं उसमें
विश्वास करूँ!”

37यीशु ने उससे कहा, “तू उसे देख चुका है और वह
वही है जिससे तू इस समय बात कर रहा है।”

38फिर वह बोला, “प्रभु, मैं विश्वास करता हूँ।” और
वह नत मस्तक हो गया।

39यीशु ने कहा, “मैं इस जगत में न्याय करने आया
हूँ, ताकि वे जो नहीं देखते वे देखने लगें और वे जो देख
रहे हैं, नेत्रहीन हो जायें।”

40कुछ फरीसी जो यीशु के साथ थे, यह सुनकर यीशु
से बोले, “निश्चय ही हम अंधे नहीं हैं। क्या हम अंधे
हैं?”

41यीशु ने उनसे कहा, “यदि तुम अँधे होते तो तुम
पापी नहीं होते पर जैसा कि तुम कहते हो कि तुम देख
सकते हो तो वास्तव में तुम पाप युक्त हो।”

चरवाहा और उसकी भेड़ें

10 यीशु ने कहा, “मैं तुमसे सत्य कहता हूँ जो
भेड़ों के बाड़े में द्वार से प्रवेश न करके बाड़ा
फाँद कर दूसरे प्रकार से घुसता है, वह चोर है, लुटेरा
है। 2किन्तु जो दरवाजे से घुसता है, वही भेड़ों का
चरवाहा है। 3द्वारपाल उसके लिए द्वार खोलता है। और
भेड़ें उसकी आवाज सुनती हैं। वह अपनी भेड़ों को नाम
ले लेकर पुकारता है और उन्हें बाड़े से बाहर ले जाता

है। 4जब वह अपनी सब भेड़ों को बाहर निकाल लेता है
तो उनके आगे–आगे चलता है। और भेड़ें उसके पीछे
पीछे चलती हैं क्योंकि वे उसकी आवाज पहचानती हैं।
5भेड़ें किसी अनजान का अनुसरण कभी नहीं करतीं।
वे तो उससे दूर भागती हैं। क्योंकि वे उस अनजान की
आवाज नहीं पहचानतीं।"

6यीशु ने उन्हें यह दृष्टान्त दिया पर वे नहीं समझ पाये
कि यीशु उन्हें क्या बता रहा है।

अच्छा चरवाहा यीशु

7इस पर यीशु ने उनसे फिर कहा, "मैं तुम्हें सत्य
बताता हूँ, भेड़ों के लिये द्वार मैं हूँ। 8वे सब जो मुझसे
पहले आये थे, चोर और लुटेरे हैं। किन्तु भेड़ों ने
उनकी नहीं सुनी। 9मैं द्वार हूँ। यदि कोई मुझमें से होकर
प्रवेश करता है तो उसकी रक्षा होगी वह भीतर आयेगा
और बाहर जा सकेगा और उसे चारागाह मिलेगी। 10चोर
केवल चोरी, हत्या और विनाश के लिये ही आता है।
किन्तु मैं इसलिये आया हूँ कि लोग भरपूर जीवन पा
सकें।

11"अच्छा चरवाहा मैं हूँ। अच्छा चरवाहा भेड़ों के
लिये अपनी जान दे देता है। 12किन्तु किराये का मज़दूर
क्योंकि वह चरवाहा नहीं होता, भेड़ें उसकी अपनी नहीं
होतीं, जब भेड़िये को आते देखता है, भेड़ों को छोड़कर
भाग जाता है। और भेड़िया उन पर हमला करके उन्हें
तितर–बितर कर देता है। 13(किराये का मज़दूर, इसलिये
भाग जाता है क्योंकि वह दैनिक मज़दूरी का आदमी है
और इसीलिए भेड़ों की परवाह नहीं करता)।

14"अच्छा चरवाहा मैं हूँ। अपनी भेड़ों को मैं जानता
हूँ और मेरी भेड़ें मुझे 15वैसे ही जानती हैं जैसे परम
पिता मुझे जानता है और मैं परम पिता को जानता हूँ।
अपनी भेड़ों के लिए मैं अपना जीवन देता हूँ। 16मेरी
और भेड़ें भी हैं जो इस बाड़े की नहीं हैं। मुझे उन्हें भी
लाना होगा। वे भी मेरी आवाज सुनेगीं और इसी बाड़े में
आकर एक हो जायेंगी। फिर सबका एक ही चरवाहा
होगा। 17परम पिता मुझसे इसीलिये प्रेम करता है कि मैं
अपना जीवन देता हूँ। मैं अपना जीवन देता हूँ ताकि मैं
उसे फिर वापस ले सकूँ। इसे मुझसे कोई लेता नहीं है।
18बल्कि मैं अपने आप अपनी इच्छा से इसे देता हूँ। मुझे
इसे देने का अधिकार है। यह आदेश मुझे मेरे परम
पिता से मिला है।"

19इन शब्दों के कारण यहूदी नेताओं में एक और
फूट पड़ गयी। 20बहुत से कहने लगे, "यह पागल हो गया
है। इस पर दुष्टात्मा सवार है। तुम इसकी परवाह क्यों
करते हो।"

21दूसरे कहने लगे, "ये शब्द किसी ऐसे व्यक्ति के
नहीं हो सकते जिस पर दुष्टात्मा सवार हो। निश्चय ही
कोई दुष्टत्मा किसी अंधे को आँखें नहीं दे सकती।"

यहूदी यीशु के विरोध में

22फिर यरूशलेम में समर्पण का पर्व* आया। सर्दी
के दिन थे। 23यीशु मंदिर में सुलेमान के दालान में टहल
रहा था। 24तभी यहूदी नेताओं ने उसे घेर लिया और
बोले, "तू हमें कब तक तंग करता रहेगा? यदि तू मसीह
है, तो साफ–साफ बता।"

25यीशु ने उत्तर दिया, "मैं तुम्हें बता चुका हूँ और तुम
विश्वास नहीं करते। वे काम जिन्हें मैं परम पिता के
नाम पर कर रहा हूँ, स्वयं मेरी साक्षी हैं। 26किन्तु तुम
लोग विश्वास नहीं करते। क्योंकि तुम मेरी भेड़ों में से
नहीं हो। 27मेरी भेड़ें मेरी आवाज को जानती हैं और मैं
उन्हें जानता हूँ। वे मेरे पीछे चलती हैं और 28मैं उन्हें
अनन्त जीवन देता हूँ। उनका कभी नाश नहीं होगा।
और न कोई उन्हें मुझसे छीन पायेगा। 29मुझे उन्हें सौंपने
वाला मेरा परम पिता सबसे महान है। मेरे पिता से उन्हें
कोई नहीं छीन सकता। 30"मेरा पिता और मैं एक हैं।"

31फिर यहूदी नेताओं ने यीशु पर मारने के लिये
पत्थर उठा लिये। 32यीशु ने उनसे कहा, "पिता की
ओर से मैंने तुम्हें अनेक अच्छे कार्य दिखाये हैं। उनमें
से किस काम के लिए तुम मुझ पर पथराव करना
चाहते हो?"

33यहूदी नेताओं ने उसे उत्तर दिया, "हम तुझ पर
किसी अच्छे काम के लिए पथराव नहीं कर रहे हैं
बल्कि इसलिए कर रहे हैं कि तूने परमेश्वर का अपमान
किया है और तू, जो केवल एक मनुष्य है, अपने को
परमेश्वर घोषित कर रहा है!"

34यीशु ने उन्हें उत्तर दिया, "क्या यह तुम्हारे विधान
में नहीं लिखा है, 'मैंने कहा तुम सभी ईश्वर हो?'*
35क्या यहाँ ईश्वर उन्हीं लोगों के लिये नहीं कहा गया
जिन्हें परम पिता का संदेश मिल चुका है? और धर्म
शास्त्र का खंडन नहीं किया जा सकता। 36क्या तुम यह
उसके लिये कह रहे हो, जिसे परम पिता ने समर्पित
कर इस जगत् को भेजा है, केवल इसलिये कि मैंने
कहा, 'मैं परमेश्वर का पुत्र हूँ'? 37यदि मैं अपने परम
पिता के ही कार्य नहीं कर रहा हूँ तो मेरा विश्वास मत
करो 38किन्तु यदि मैं अपने परम पिता के ही कार्य कर
रहा हूँ, तो, यदि तुम मुझ में विश्वास नहीं करते तो उन
कार्यों में ही विश्वास करो जिससे तुम यह अनुभव कर
सको और जान सको कि परम पिता मुझ में है और मैं
परम पिता में।"

39इस पर यहूदियों ने उसे बंदी बनाने का प्रयत्न एक
बार फिर किया। पर यीशु उनके हाथों से बच निकला।
40यीशु फिर यर्दन के पार उस स्थान पर चला गया जहाँ

समर्पण का पर्व दिसम्बर का एक विशेष सप्ताह जिसे यहूदी मनाते थे।

"मैंने कहा ... हो" भजन. 82:6

पहले यूहन्ना बपतिस्मा दिया करता था। यीशु वहाँ ठहरा,
41बहुत से लोग उसके पास आये और कहने लगे,
“यूहन्ना ने कोई आश्चर्यकर्म नहीं किये पर इस व्यक्ति
के बारे में यूहन्ना ने जो कुछ कहा था सब सच निकला।”
42फिर वहाँ बहुत से लोग यीशु में विश्वास करने लगे।

लाज़र की मृत्यु

11 बैतनिय्याह का लाज़र नाम का एक व्यक्ति
बीमार था। यह वह नगर था जहाँ मरियम और
उसकी बहन मारथा रहती थीं। 2(मरियम वह स्त्री थी
जिसने प्रभु पर इत्र डाला था और अपने सिर के बालों
से प्रभु के पैर पोंछे थे। लाज़र नाम का रोगी उसी का
भाई था।) 3इन बहनों ने यीशु के पास समाचार भेजा,
“हे प्रभु, जिसे तू प्यार करता है, वह बीमार है।”

4यीशु ने जब यह सुना तो वह बोला, “यह बीमारी
जान लेवा नहीं है। बल्कि परमेश्वर की महिमा को
प्रकट करने के लिये है। जिससे परमेश्वर के पुत्र को
महिमा प्राप्त होगी।” 5(यीशु मारथा, उसकी बहन और
लाज़र को प्यार करता था।) 6इसलिए जब उसने सुना
कि लाज़र बीमार हो गया है तो जहाँ वह ठहरा था, दो
दिन और रुका। 7फिर यीशु ने अपने अनुयायियों से
कहा, “आओ हम यहूदिया लौट चलें।”

8इस पर उसके अनुयायियों ने उससे कहा, “हे रब्बी,
कुछ ही दिन पहले यहूदी नेता तुझ पर पथराव करने
का यत्न कर रहे थे और तू फिर वहीं जा रहा है।”

9यीशु ने उत्तर दिया, “क्या एक दिन में बारह घंटे
नहीं होते हैं। यदि कोई व्यक्ति दिन के प्रकाश में चले तो
वह ठोकर नहीं खाता क्योंकि वह इस जगत के प्रकाश
को देखता है। 10पर यदि कोई रात में चले तो वह
ठोकर खाता है क्योंकि उसमें प्रकाश नहीं है।”

11उसने यह कहा और फिर उनसे बोला, “हमारा
मित्र लाज़र सो गया है पर मैं उसे जगाने जा रहा हूँ।”

12फिर उसके शिष्यों ने उससे कहा, “हे प्रभु, यदि
उसे नींद आ गयी है तो वह अच्छा हो जायेगा।”

13यीशु लाज़र की मौत के बारे में कह रहा था पर
शिष्यों ने सोचा कि वह स्वाभाविक नींद की बात कर
रहा था। 14इसलिये फिर यीशु ने उनसे स्पष्ट कहा,
“लाज़र मर चुका है।” 15मैं तुम्हारे लिये प्रसन्न हूँ कि मैं
वहाँ नहीं था। क्योंकि अब तुम मुझमें विश्वास कर
सकोगे। आओ अब हम उसके पास चलें।”

16फिर थोमा ने जो दिदुमुस कहलाता था, दूसरे शिष्यों
से कहा, “आओ हम भी प्रभु के साथ वहाँ चलें ताकि
हम भी उसके साथ मर सकें।”

बैतनिय्याह में यीशु

17इस तरह यीशु चल दिया और वहाँ जाकर उसने
पाया कि लाज़र को क्रब में रखे चार दिन हो चुके हैं।
18बैतनिय्याह यरूशलेम से लगभग तीन किलोमीटर दूर
था। 19भाई की मृत्यु पर मारथा और मरियम को
सांत्वना देने के लिये बहुत से यहूदी नेता आये थे।

20जब मारथा ने सुना कि यीशु आया है तो वह
उससे मिलने गयी। जबकि मरियम घर में ही रही 21वहाँ
जाकर मारथा ने यीशु से कहा, “हे प्रभु, यदि तू यहाँ
होता तो मेरा भाई मरता नहीं। 22पर मैं जानती हूँ कि
अब भी तू परमेश्वर से जो कुछ माँगेगा वह तुझे देगा।”

23यीशु ने उससे कहा, “तेरा भाई जी उठेगा।” 24मारथा
ने उससे कहा, “मैं जानती हूँ कि पुनरुत्थान के अन्तिम
दिन वह जी उठेगा।”

25यीशु ने उससे कहा, “मैं ही पुनरुत्थान हूँ और मैं
ही जीवन हूँ। वह जो मुझमें विश्वास करता है जियेगा।
26और हर वह, जो जीवित है और मुझमें विश्वास
रखता है, कभी नहीं मरेगा। क्या तू यह विश्वास रखती
है।”

27वह यीशु से बोली, “हाँ प्रभु, मैं विश्वास करती
हूँकि तू मसीह है, परमेश्वर का पुत्र जो जगत् में आने
वालाथा।”

यीशु रो दिया

28फिर इतना कह कर वह वहाँ से चली गयी और
अपनी बहन को अकेले में बुलाकर बोली, “गुरु यहीं है,
वह तुझे बुला रहा है।” 29जब मरियम ने यह सुना तो
वह तत्काल उठकर उससे मिलने चल दी। 30(यीशु
अभी तक गाँव में नहीं आया था। वह अभी भी उसी
स्थान पर था जहाँ उसे मारथा मिली थी।) 31फिर जो
यहूदी घर पर उसे सांत्वना दे रहे थे, जब उन्होंने देखा
कि मरियम उठकर झटपट चल दी तो वे यह सोच कर
कि वह कब्र पर विलाप करने जा रही है, उसके पीछे
हो लिये। 32मरियम जब वहाँ पहुँची जहाँ यीशु था तो
यीशु को देखकर उसके चरणों में गिर पड़ी और बोली,
“हे प्रभु, यदि तू यहाँ होता तो मेरा भाई मरता नहीं।”

33यीशु ने जब उसे और उसके साथ आये यहूदियों
को रोते बिलखते देखा तो उसकी आत्मा तड़प उठी।
वह बहुत व्याकुल हुआ। 34और बोला, “तुमने उसे कहाँ
रखा है?” वे उससे बोले, “प्रभु, आ और देख।”

35यीशु फूट-फूट कर रोने लगा।

36इस पर यहूदी कहने लगे, “देखो! यह लाज़र को
कितना प्यार करता है।”

37मगर उनमें से कुछ ने कहा, “यह व्यक्ति जिसने
अंधे को आँखे दीं, क्या लाज़र को भी मरने से नहीं
बचा सकता?”

यीशु का लाज़र को फिर जीवित करना

38तब यीशु अपने मन में एक बार फिर बहुत अधिक
व्याकुल हुआ और कब्र की तरफ गया। यह एक गुफा

थी और उसका द्वार एक चट्टान से ढका हुआ था।
39यीशु ने कहा, "इस चट्टान को हटाओ।" मृतक की
बहन मारथा ने कहा, "हे प्रभु, अब तक तो वहाँ से
दुर्गन्ध आ रही होगी क्योंकि उसे दफनाए चार दिन हो
चुके हैं।"

40यीशु ने उससे कहा, "क्या मैंने तुझसे नहीं कहा
कि यदि तू विश्वास करेगी तो परमेश्वर की महिमा का
दर्शन पायेगी।"

41तब उन्होंने उस चट्टान को हटा दिया। और यीशु ने
अपनी आँखें ऊपर उठाते हुए कहा, "परम पिता मैं तेरा
धन्यवाद करता हूँ क्योंकि तूने मेरी सुन ली है। 42मैं
जानता हूँ कि तू सदा मेरी सुनता है किन्तु चारों ओर
इकट्ठी भीड़ के लिये मैंने यह कहा है जिससे वे यह
मान सकें कि मुझे तूने भेजा है।" 43यह कहने के बाद
उसने ऊँचे स्वर में पुकारा "लाज़र, बाहर आ!" 44वह
व्यक्ति जो मर चुका था बाहर निकल आया। उसके
हाथ पैर अभी भी कफ़न में बँधे थें। उसका मुँह कपड़े
में लिपटा हुआ था। यीशु ने लोगों से कहा, "इसे खोल
दो और जाने दो।"

यहूदी नेताओं द्वारा यीशु की हत्या का षडयन्त्र

(मत्ती 26:1-5; मरकुस 14:1-2; लूका 22:1-2)

45इसके बाद मरियम के साथ आये यहूदियों में से
बहुतों ने यीशु के इस कार्य को देखकर उस पर विश्वास
किया। 46किन्तु उनमें से कुछ फरीसियों के पास गये
और जो कुछ यीशु ने किया था, उन्हें बताया। 47फिर
महायाजकों और फरीसियों ने यहूदियों की सबसे ऊँची
परिषद बुलाई। और कहा, "हमें क्या करना चाहिये?
यह व्यक्ति बहुत से आश्चर्य चिह्न दिखा रहा है। 48यदि
हमने उसे ऐसे ही करते रहने दिया तो हर कोई उस पर
विश्वास करने लगेगा और इस तरह रोमी लोग यहाँ आ
जायेंगे और हमारे मन्दिर व देश को नष्ट कर देंगे।"

49किन्तु उस वर्ष के महायाजक कैफा ने उनसे कहा,
"तुम लोग कुछ भी नहीं जानते। 50और न ही तुम्हें इस
बात की समझ है कि इसी में तुम्हारा लाभ है कि बजाय
इसके कि सारी जाति ही नष्ट हो जाये, सबके लिये एक
आदमी को मारना होगा।"

51यह बात उसने अपनी तरफ़ से नहीं कही थी पर
क्योंकि वह उस साल का महायाजक था उसने
भविष्यवाणी की थी कि यीशु लोगों के लिये मरने जा
रहा है 52न केवल यहूदियों के लिये बल्कि परमेश्वर
की संतान जो तितर-बितर हैं, उन्हें एकत्र करने के
लिये।

53इस तरह उसी दिन से वे यीशु को मारने के कुचक्र
रचने लगे। 54यीशु यहूदियों के बीच फिर कभी प्रकट
होकर नहीं गया। और यरूशलेम छोड़कर वह निर्जन
रेगिस्तान के पास इफ्राईम नगर जा कर अपने शिष्यों
के साथ रहने लगा। 55यहूदियों का फ़सह पर्व आने को
था। बहुत से लोग अपने गाँवों से यरूशलेम चले गये थे
ताकि वे फ़सह पर्व से पहले अपने को पवित्र कर लें।
56वे यीशु को खोज रहे थे। इसलिये जब वे मन्दिर में
खड़े थे तो उन्होंने आपस में एक दूसरे से पूछना शुरू
किया, "तुम क्या सोचते हो, क्या निश्चय ही वह इस
पर्व में नहीं आयेगा।" 57फिर महायाजकों और फरीसियों
ने यह आदेश दिया कि यदि किसी को पता चले कि
यीशु कहाँ है तो वह इसकी सूचना दे ताकि वे उसे बंदी
बना सकें।

यीशु बैतनिय्याह में अपने मित्रों के साथ

(मत्ती 26:6-13; मरकुस 14:3-9)

12 फ़सह पर्व से छह दिन पहले यीशु बैतनिय्याह
को रवाना हो गया। वहीं लाज़र रहता था जिसे
यीशु ने मृतकों मे से जीवित किया था। 2वहाँ यीशु के
लिये उन्होंने भोजन तैयार किया। मारथा ने उसे परोसा।
यीशु के साथ भोजन के लिये जो बैठे थे लाज़र भी
उनमें एक था। 3मरियम ने जटामाँसी से तैयार किया
हुआ कोई आधा लीटर बहुमूल्य इत्र यीशु के पैरों पर
लगायाा और फिर अपने केशों से उसके चरणों को
पोंछा। सारा घर सुगंध से महक उठा। 4उसके शिष्यों में
से एक यहूदा इस्करियोती ने, जो उसे धोखा देने वाला
था कहा, 5"इस इत्र को तीन सौ चाँदी के सिक्कों में
बेचकर धन गरीबों को क्यों नहीं दे दिया गया?" 6उसने
यह बात इसलिये नहीं कही थी कि उसे गरीबों की बहुत
चिन्ता थी बल्कि वह तो स्वयं एक चोर था। और
रूपयों की थैली उसी के पास रहती थी। उसमें जो डाला
जाता उसे वह चुरा लेता था।

7तब यीशु ने कहा, "रहने दो। उसे रोको मत। उसने
मेरे गाड़े जाने की तैयारी में यह सब किया है। 8गरीब
लोग सदा तुम्हारे पास रहेंगे पर मैं सदा तुम्हारे साथ नहीं
रहूँगा।"

लाज़र के विरुद्ध षड़यन्त्र

9फ़सह पर्व पर आयी यहूदियों की भारी भीड़ को जब
यह पता चला कि यीशु वहीं बैतनिय्याह में है तो वह
उससे मिलने आयी। न केवल उससे बल्कि वह उस
लाज़र को देखने के लिये भी आयी थी जिसे यीशु ने
मरने के बाद फिर जीवित कर दिया था। 10इसलिये
महायाजकों ने लाज़र को भी मारने की योजना बनायी।
11क्योंकि उसी के कारण बहुत से यहूदी अपने नेताओं
को छोड़कर यीशु में विश्वास करने लगे थे।

यीशु का यरूशलेम में प्रवेश

(मत्ती 21:1-11; मरकुस 11:1-11; लूका 19:28-40)

12अगले दिन फ़सह पर्व पर आई भीड़ ने जब यह
सुना कि यीशु यरूशलेम में आ रहा है 13तो लोग खजूर

की टहनियाँ लेकर उससे मिलने चल पड़े। वे पुकार रहे
थे, “होशन्ना! धन्य है वह जो प्रभु के नाम से आता है।
वह जो इस्राएल का राजा है।” *भजन संहिता 118:25-26*

14तब यीशु को एक गधा मिला और वह उस पर
सवार हो गया। जैसा कि धर्मशास्त्र में लिखा है:
15“सिय्योन की पुत्री,* डर मत! देख! तेरा राजा गधे
के बछेरे पर बैठा आ रहा है।” *जकर्याह 9:9*

16पहले तो उसके अनुयायी इसे समझे ही नहीं किन्तु
जब यीशु की महिमा प्रकट हुई तो उन्हें याद आया कि
शास्त्र में ये बातें उसके बारे में लिखी हुई थीं—और
लोगों ने उसके साथ ऐसा व्यवहार किया था।

यीशु के विषय में लोगों का कथन

17उसके साथ जो भीड़ थी उसने यह साक्षी दी कि
उसने लाज़र को कब्र से पुकार कर मरे हुओं में से
पुनर्जीवित किया। 18लोग उससे मिलने इसलिए आये थे
कि उन्होंने सुना था कि यह वही है जिसने वह आश्चर्यकर्म
किया है। 19तब फरीसी आपस में कहने लगे, “सोचो
तुम लोग कुछ नहीं कर पा रहे हो, देखो सारा जगत्
उसके पीछे हो लिया है।”

अपनी मृत्यु के बारे में यीशु का वचन

20फ़सह पर्व पर जो आराधना करने आये थे उनमें
से कुछ यूनानी थे। 21वे गलील में बैतसैदा के निवासी
फिलिप्पुस के पास गये और उससे विनती करते हुए
कहने लगे, “महोदय, हम यीशु के दर्शन करना चाहते
हैं।” तब फिलिप्पुस ने अन्द्रियास को आकर बताया।
22फिर अन्द्रियास और फिलिप्पुस ने यीशु के पास आकर
कहा।

23यीशु ने उन्हें उत्तर दिया, “मानव-पुत्र के महिमावान
होने का समय आ गया है। 24मैं तुमसे सत्य कहता हूँ
कि जब तक गेहूँ का एक दाना धरती पर गिर कर मर
नहीं जाता, तब तक वह एक ही रहता है। पर जब वह
मर जाता है तो अनगिनत दानों को जन्म देता है।”
25जिसे अपना जीवन प्रिय है, वह उसे खो देगा किन्तु
वह, जिसे इस संसार में अपने जीवन से प्रेम नहीं है, उसे
अनन्त जीवन के लिये रखेगा। 26यदि कोई मेरी सेवा
करता है तो वह निश्चय ही मेरा अनुसरण करे और
जहाँ मैं हूँ, वहीं मेरा सेवक भी रहेगा। यदि कोई मेरी
सेवा करता है तो परम पिता उसका आदर करेगा।

यीशु द्वारा अपनी मृत्यु का संकेत

27“अब मेरा जी घबरा रहा है। क्या मैं कहूँ, ‘हे पिता,
मुझे दुख की इस घड़ी से बचा’ किन्तु इस घड़ी के लिए
ही तो मैं आया हूँ। 28हे पिता, अपने नाम को महिमा
प्रदानकर!”

तब आकाशवाणी हुई, “मैंने इसकी महिमा की है
और मैं इसकी महिमा फिर करूँगा।”

29तब वहाँ मौजूद भीड़, जिसने यह सुना था, कहने
लगी कि कोई बादल गरजा है। दूसरे कहने लगे, “किसी
स्वर्गदूत ने उससे बात की है।”

30उत्तर में यीशु ने कहा, “यह आकाशवाणी मेरे लिए
नहीं बल्कि तुम्हारे लिए थी। 31अब इस जगत् के न्याय
का समय आ गया है। अब इस जगत् के शासक को
निकाल दिया जायेगा। 32और यदि मैं धरती के ऊपर
उठा लिया गया तो सब लोगों को अपनी ओर आकर्षित
करूँगा।” 33वह यह बताने के लिए ऐसा कह रहा था
कि वह कैसी मृत्यु मरने जा रहा है।

34इस पर भीड़ ने उसको जवाब दिया, “हमने व्यवस्था
की यह बात सुनी है कि मसीह सदा रहेगा इसलिये तुम
कैसे कहते हो कि मनुष्य के पुत्र को निश्चय ही ऊपर
उठाया जायेगा। यह मनुष्य का पुत्र कौन है?”

35तब यीशु ने उनसे कहा, “तुम्हारे बीच ज्योति अभी
कुछ समय और रहेगी। जब तक ज्योति है चलते रहो।
ताकि अँधेरा तुम्हें घेर न ले क्योंकि जो अँधेरे में चलता
है, नहीं जानता कि वह कहाँ जा रहा है। 36जब तक
ज्योति तुम्हारे पास है उसमें विश्वास बनाये रखो ताकि
तुम लोग ज्योतिर्मय हो सको।” यीशु यह कहकर कहीं
चला गया और उनसे छुप गया।

यहूदियों का यीशु में अविश्वास

37यद्यपि यीशु ने उनके सामने ये सब आश्चर्य चिन्ह
प्रकट किये किन्तु उन्होंने विश्वास नहीं किया 38ताकि
भविष्यवक्ता यशायाह ने जो यह कहा था सत्य सिद्ध हो

“प्रभु हमारे संदेश पर किसने विश्वास किया है?
किस पर प्रभु की शक्ति प्रकट की गयी है?”

यशायाह 53:1

39इसी कारण वे विश्वास नहीं कर सके। क्योंकि
यशायाह ने फिर कहा था,

40“उसने उनकी आँखे अंधी और उनका हृदय कठोर
बनाया ताकि वे अपनी आँखों से देख न सकें और
बुद्धि से समझ न पायें और मेरी ओर न मुड़ें जिससे मैं
उन्हें चंगा कर सकूँ।” *यशायाह 6:10*

41यशायाह ने यह इसलिये कहा था कि उसने उसकी
महिमा देखी थी और उसके विषय में बातें भी की थीं।

42फिर भी बहुत थे यहाँ तक कि यहूदी नेताओं में से
भी ऐसे अनेक थे जिन्होंने उसमें विश्वास किया। किन्तु
फ़रीसियों के कारण अपने विश्वास की खुले तौर पर
घोषणा नहीं की, क्योंकि ऐसा करने पर उन्हें आराधना
सभा से निकाले जाने का भय था। 43उन्हें मनुष्यों द्वारा

सिय्योन की पुत्री अर्थात् यरूशलेम।

दिया गया सम्मान परमेश्वर द्वारा दिये गये सम्मान से अधिक प्यारा था।

यीशु के उपदेशों पर ही मनुष्य का न्याय होगा

44यीशु ने पुकार कर कहा, "वह जो मुझ में विश्वास करता है, वह मुझ में नहीं, बल्कि उसमें विश्वास करता है जिसने मुझे भेजा है। 45और जो मुझे देखता है, वह उसे देखता है जिसने मुझे भेजा है। 46मैं जगत् में प्रकाश के रूप में आया ताकि हर वह व्यक्ति जो मुझ में विश्वास रखता है, अंधकार में न रहे।

47"यदि कोई मेरे शब्दों को सुनकर भी उनका पालन नहीं करता तो भी उसे मैं दोषी नहीं ठहराता क्योंकि मैं जगत् को दोषी ठहराने नहीं बल्कि उसका उद्धार करने आया हूँ। 48जो मुझे नकारता है और मेरे वचनों को स्वीकार नहीं करता, उसके लिये एक है जो उसका न्याय करेगा। वह है मेरा वचन जिसका उपदेश मैंने दिया है। अन्तिम दिन वही उसका न्याय करेगा। 49क्योंकि मैंने अपनी ओर से कुछ नहीं कहा है बल्कि परम पिता ने, जिसने मुझे भेजा है, आदेश दिया है कि मैं क्या कहूँ और क्या उपदेश दूँ। 50और मैं जानता हूँ कि उसके आदेश का अर्थ है अनन्त जीवन। इसलिये मैं जो बोलता हूँ, वह ठीक वही है जो परम पिता ने मुझ से कहा है।"

यीशु का अपने शिष्यों के पैर धोना

13 फ़सह पर्व से पहले यीशु ने देखा कि इस जगत को छोड़ने और परम पिता के पास जाने का उसका समय आ पहुँचा है तो इस जगत् में जो उसके अपने थे और जिन्हें वह प्रेम करता था, उन पर उसने चरम सीमा का प्रेम दिखाया।

2शाम का खाना चल रहा था। शैतान अब तक शमौन इस्करियोती के पुत्र यहूदा के मन में यह डाल चुका था कि वह यीशु को धोखे से पकड़वाएगा। 3यीशु यह जानता था कि परम पिता ने सब कुछ उसके हाथों सौंप दिया है और वह परमेश्वर से आया है, और परमेश्वर के पास ही वापस जा रहा है। 4इसलिये वह खाना छोड़ कर खड़ा हो गया। उसने अपने बाहरी वस्त्र उतार दिये और एक अँगोछा अपने चारों ओर लपेट लिया। 5फिर एक घड़े में जल भरा और अपने शिष्यों के पैर धोने लगा और उस अँगोछे से जो उसने लपेटा हुआ था, उनके पाँव पोंछने लगा।

6फिर जब वह शमौन पतरस के पास पहुँचा तो पतरस ने उससे कहा, "प्रभु, क्या तू मेरे पाँव धो रहा है।"

7उत्तर में यीशु ने उससे कहा, "अभी तू नहीं जानता कि मैं क्या कर रहा हूँ पर बाद में जान जायेगा।"

8पतरस ने उससे कहा, "तू मेरे पाँव कभी भी नहीं धोयेगा।"

यीशु ने उत्तर दिया, "यदि मैं न धोऊँ तो तू मेरे पास स्थान नहीं पा सकेगा।"

9शमौन पतरस ने उससे कहा, "प्रभु, केवल मेरे पैर ही नहीं, बल्कि मेरे हाथ और मेरा सिर भी धो दे।"

10यीशु ने उससे कहा, "जो नहा चुका है उसे अपने पैरों के सिवा कुछ भी और धोने की आवश्यकता नहीं है। बल्कि वह पूरी तरह शुद्ध होता है। तुम लोग शुद्ध हो पर सबके सब नहीं।"

11वह उसे जानता था जो उसे धोखे से पकड़वाने वाला है। इसलिए उसने कहा था, "तुम में से सभी शुद्ध नहीं हैं।"

12जब वह उनके पाँव धो चुका तो उसने अपने बाहरी वस्त्र फिर पहन लिये और वापस अपने स्थान पर आकर बैठ गया। और उनसे बोला, "क्या तुम जानते हो कि मैंने तुम्हारे लिये क्या किया है? 13तुम लोग मुझे 'गुरु' और 'प्रभु' कहते हो। और तुम उचित हो। क्योंकि मैं वही हूँ। 14इसलिये यदि मैंनें प्रभु और गुरु होकर भी जब तुम्हारे पैर धोये हैं तो तुम्हें भी एक दूसरे के पैर धोने चाहियें। मैंनें तुम्हारे सामने एक उदाहरण रखा है 15ताकि तुम दूसरों के साथ वही कर सको जो मैंनें तुम्हारे साथ किया है। 16मैं तुम्हें सत्य कहता हूँ एक दास स्वामी से बड़ा नहीं है और न ही एक संदेशवाहक उससे बड़ा है जो उसे भेजता है। 17यदि तुम लोग इन बातों को जानते हो और उन पर चलते हो तो तुम सुखी होगे।

18"मैं तुम सब के बारे में नहीं कह रहा हूँ। मैं उन्हें जानता हूँ जिन्हें मैंने चुना है। (और यह भी कि यहूदा विश्वासघाती है) किन्तु मैंने उसे इसलिये चुना है ताकि शास्त्र का यह वचन सत्य हो, 'वही जिसने मेरी रोटी खायी मेरे विरोध में हो गया।' 19अब यह घटित होने से पहले ही मैं तुम्हें इसलिये बता रहा हूँ कि जब यह घटित हो तब तुम विश्वास करो कि वह 'मैं हूँ'। 20मैं तुम्हें सत्य कहता हूँ कि वह जो किसी भी मेरे भेजे हुए को ग्रहण करता है, मुझको ग्रहण करता है। और जो मुझे ग्रहण करता है, उसे ग्रहण करता है जिसने मुझे भेजा है।"

यीशु का कथन: मरवाने के लिये उसे कौन पकड़वायेगा

(मत्ती 26:20-25; मरकुस 14:17-21; लूका 22:21-23)

21यह कहने के बाद यीशु बहुत व्याकुल हुआ और साक्षी दी, "मैं तुमसे सत्य कहता हूँ, तुम में से एक मुझे धोखा देकर पकड़वायेगा।"

22तब उसके शिष्य एक दूसरे की तरफ़ देखने लगे। वे निश्चय ही नहीं कर पा रहे थे कि वह किस के बारे में कह रहा है। 23उसका एक शिष्य यीशु के निकट ही बैठा हुआ था। इसे यीशु बहुत प्यार करता था। 24तब

शमौन पतरस ने उसे इशारा किया कि पूछे वह कौन हो सकता है जिस के विषय में यीशु बता रहा था।

25यीशु के प्रिय शिष्य ने सहज में ही उसकी छाती पर झुक कर उससे पूछा, "हे प्रभु, वह कौन है?"

26यीशु ने उत्तर दिया, "रोटी का टुकड़ा कटोरे में डुबो कर जिसे मैं दूँगा, वही वह है।" फिर यीशु ने रोटी का टुकड़ा कटोरे में डुबोया और उसे उठा कर शमौन इस्करियोती के पुत्र यहूदा को दिया। **27**जैसे ही यहूदा ने रोटी का टुकड़ा लिया उसमें शैतान समा गया। फिर यीशु ने उससे कहा, "जो तू करने जा रहा है, उसे तुरन्त कर।" **28**किन्तु वहाँ बैठे हुओं में से किसी ने भी यह नहीं समझा कि यीशु ने उससे यह बात क्यों कही। **29**कुछ ने सोचा कि रुपयों की थैली यहूदा के पास रहती है इसलिए यीशु उससे कह रहा है कि 'पर्व' के लिये आवश्यक सामग्री मोल ले आओ या कह रहा है कि ग़रीबों को वह कुछ दे दे। इसलिए यहूदा ने रोटी का टुकड़ा लिया **30**और तत्काल चला गया। यह रात का समय था।

अपनी मृत्यु के विषय में यीशु का वचन

31उसके चले जाने के बाद यीशु ने कहा, "मनुष्य का पुत्र अब महिमावान हुआ है। और उसके द्वारा परमेश्वर की महिमा हुई है। **32**यदि उसके द्वारा परमेश्वर की महिमा हुई है तो परमेश्वर अपने द्वारा उसे महिमावान करेगा। और वह उसे महिमा शीघ्र ही देगा।"

33"हे मेरे प्यारे बच्चों, मैं अब थोड़ी ही देर और तुम्हारे साथ हूँ। तुम मुझे ढूँढोगे और जैसा कि मैंने यहूदी नेताओं से कहा था, तुम वहाँ नहीं आ सकते, जहाँ मैं जा रहा हूँ, वैसा ही अब मैं तुमसे कहता हूँ।

34"मैं तुम्हें एक नयी आज्ञा देता हूँ कि तुम एक दूसरे से प्रेम करो। जैसे मैंने तुमसे प्यार किया है वैसे ही तुम भी एक दूसरे से प्रेम करो। **35**यदि तुम एक दूसरे से प्रेम रखोगे तभी हर कोई यह जान पायेगा कि तुम मेरे अनुयायी हो।"

यीशु का वचन–पतरस उसे पहचानने से इन्कार करेगा

(मत्ती 26:31-35; मरकुस 14:27-31; लूका 22:31-34)

36शमौन पतरस ने उससे पूछा, "हे प्रभु, तू कहाँ जा रहा है?"

यीशु ने उसे उत्तर दिया, "तू अब मेरे पीछे नहीं आ सकता। पर तू बाद में मेरे पीछे आयेगा।"

37पतरस ने उससे पूछा, "हे प्रभु, अभी मैं तेरे पीछे क्यों नहीं आ सकता? मैं तो तेरे लिये अपने प्राण तक त्याग दूँगा।"

38यीशु ने उत्तर दिया, "तू अपना प्राण त्यागेगा? मैं तुझे सत्य कहता हूँ कि जब तक तू तीन बार इन्कार नहीं कर लेगा तब तक मुर्गा बाँग नहीं देगा।"

यीशु का शिष्यों को समझाना

14 "तुम्हारे हृदय दुखी नहीं होने चाहियें। परमेश्वर में विश्वास रखो और मुझमें भी विश्वास बनाये रखो। **2**मेरे परम पिता के घर में बहुत से कमरे हैं। (यदि ऐसा नहीं होता तो मैं तुमसे कह देता) मैं तुम्हारे लिए स्थान बनाने जा रहा हूँ। **3**और यदि मैं वहाँ जाऊँ और तुम्हारे लिए स्थान तैयार करूँ तो मैं फिर यहाँ आऊँगा और अपने साथ तुम्हें भी वहाँ ले चलूँगा ताकि तुम भी वहीं रहो जहाँ मैं हूँ। **4**और जहाँ मैं जा रहा हूँ तुम वहाँ का रास्ता जानते हो।"

5थोमा ने उससे कहा, "हे प्रभु, हम नहीं जानते तू कहाँ जा रहा है। फिर वहाँ का रास्ता कैसे जान सकते हैं?"

6यीशु ने उससे कहा, "मैं ही मार्ग हूँ, सत्य हूँ और जीवन हूँ। बिना मेरे द्वारा कोई भी परम पिता के पास नहीं आता। **7**यदि तूने मुझे जान लिया होता तो तू परम पिता को भी जानता। अब तू उसे जानता है और उसे देख भी चुका है।"

8फिलिप्पुस ने उससे कहा, "हे प्रभु, हमे परम पिता के दर्शन करा दे। हमे संतोष हो जायेगा।"

9यीशु ने उससे कहा, "फिलिप्पुस मैं इतने लम्बे समय से तेरे साथ हूँ और तब भी तू मुझे नहीं जानता? जिसने मुझे देखा है, उसने परम पिता को देख लिया है। फिर तू कैसे कहता है?, 'हमें परम पिता के दर्शन करा दे।' **10**क्या तुझे विश्वास नहीं है कि मैं परम पिता में हूँ और परम पिता मुझ में है? वे वचन जो मैं तुम लोगों से कहता हूँ, अपनी ओर से ही नहीं कहता। परम पिता जो मुझ में निवास करता है, अपने काम करता है। **11**जब मैं कहता हूँ कि मैं परम पिता में हूँ और परम पिता मुझ में है तो मेरा विश्वास करो और यदि नहीं तो स्वयं कामों के कारण ही विश्वास करो। **12**मैं तुम्हें सत्य कहता हूँ, जो मुझ में विश्वास करता है, वह भी उन कार्यों को करेगा जिन्हें मैं करता हूँ। वास्तव में वह इन कामों से भी बड़े काम करेगा। क्योंकि मैं परम पिता के पास जा रहा हूँ। **13**और मैं वह सब कुछ करूँगा जो तुम लोग मेरे नाम से माँगोगे जिससे पुत्र के द्वारा परम पिता महिमावान हो। **14**यदि तुम मुझसे मेरे नाम में कुछ भी माँगोगे तो मैं उसे करूँगा।

पवित्र आत्मा की प्रतिज्ञा

15"यदि तुम मुझे प्रेम करते हो, तो मेरी आज्ञाओं का पालन करोगे। **16**मैं परम पिता से विनती करूँगा और वह तुम्हें एक दूसरा सहायक* देगा ताकि वह सदा तुम्हारे साथ रह सके। **17**यानी सत्य का

सहायक अथवा 'सुखदाता' यहाँ यीशु पवित्र आत्मा के विषय में बता रहा है।

आत्मा* जिसे जगत् ग्रहण नहीं कर सकता क्योंकि वह
उसे न तो देखता है और न ही उसे जानता है। तुम लोग
उसे जानते हो क्योंकि वह आज तुम्हारे साथ रहता है
और भविष्य में तुम में रहेगा।

18“मैं तुम्हें अनाथ नहीं छोड़ूँगा। मैं तुम्हारे पास आ
रहा हूँ। 19कुछ ही समय बाद जगत् मुझे और नहीं
देखेगा किन्तु तुम मुझे देखोगे क्योंकि मैं जीवित हूँ और
तुम भी जीवित रहोगे। 20उस दिन तुम जानोगे कि मैं
परम पिता में हूँ, तुम मुझ में हो और मैं तुममें। 21वह जो
मेरे आदेशों को स्वीकार करता है और उनका पालन
करता है, मुझसे प्रेम करता है। जो मुझमें प्रेम रखता है
उसे मेरा परम पिता प्रेम करेगा। मैं भी उसे प्रेम करूँगा
और अपने आप को उस पर प्रकट करूँगा।”

22यहूदा ने (यहूदा इस्करियोती ने नहीं) उससे कहा,
“हे प्रभु, ऐसा क्यों है कि तू अपने आपको हम पर
प्रकट करना चाहता है और जगत् पर नहीं?”

23उत्तर में यीशु ने उससे कहा, “यदि कोई मुझमें प्रेम
रखता है तो वह मेरे वचन का पालन करेगा। और
उससे मेरा परम पिता प्रेम करेगा। और हम उसके पास
आयेंगे और उसके साथ निवास करेंगे। 24जो मुझ में
प्रेम नहीं रखता, वह मेरे उपदेशों पर नहीं चलता। यह
उपदेश जिसे तुम सुन रहे हो, मेरा नहीं है, बल्कि उस
परम पिता का है जिसने मुझे भेजा है।

25“ये बातें मैंने तुमसे तभी कही थीं जब मैं तुम्हारे
साथ था। 26किन्तु सहायक अर्थात् पवित्र आत्मा जिसे
परम पिता मेरे नाम से भेजेगा, तुम्हें सब कुछ बतायेगा।
और जो कुछ मैंने तुमसे कहा है उसे तुम्हें याद
दिलायेगा।

27“मैं तुम्हारे लिये अपनी शांति छोड़ रहा हूँ। मैं तुम्हें
स्वयं अपनी शांति दे रहा हूँ पर तुम्हें इसे मैं वैसे नहीं दे
रहा हूँ जैसे जगत देता है। तुम्हारा मन व्याकुल नहीं
होना चाहिये और न ही उसे डरना चाहिये। 28तुमने मुझे
कहते सुना है कि मैं जा रहा हूँ और तुम्हारे पास फिर
आऊँगा। यदि तुमने मुझसे प्रेम किया होता तो तुम प्रसन्न
होते क्योंकि मैं परम पिता के पास जा रहा हूँ। क्योंकि
परम पिता मुझ से महान है। 29और अब यह घटित होने
से पहले ही मैंने तुम्हें बता दिया है ताकि जब यह घटित
हो तो तुम्हें विश्वास हो। 30और अधिक समय तक मैं
तुम्हारे साथ बात नहीं करूँगा क्योंकि इस जगत का
शासक आ रहा है। मुझ पर उसका कोई बस नहीं
चलता। किन्तु ये बातें इसलिए घट रहीं हैं ताकि जगत्
जान जाये कि मैं परम पिता से प्रेम करता हूँ। 31और
पिता ने जैसी आज्ञा मुझे दी है, मैं वैसा ही करता हूँ।
“अब उठो, हम यहाँ से चलें।”

आत्मा पवित्र आत्मा। इसे परमेश्वर की आत्मा, और सुखदाता भी कहा है। वह मसीह से जुड़ा है। जगत में लोगों के बीच वह परमेश्वर का कार्य करता है। देखें यूहन्ना 16:13

यीशु–सच्ची दाखलता

15 यीशु ने कहा, “सच्ची दाखलता मैं हूँ। और
मेरा परम पिता देख–रेख करने वाला माली
है। 2मेरी हर उस शाखा को जिस पर फल नहीं लगता,
वह काट देता है। और हर उस शाखा को जो फलती है,
वह छाँटता है ताकि उस पर और अधिक फल लगें।
3तुम लोग तो जो उपदेश मैंने तुम्हें दिया है, उसके
कारण पहले ही शुद्ध हो। 4तुम मुझ में रहो और मैं तुम
में रहूँगा। वैसे ही जैसे कोई शाखा जब तक दाखलता में
बनी नहीं रहती, तब तक अपने आप फल नहीं सकती
वैसे ही तुम भी तब तक सफल नहीं हो सकते जब तक
मुझ में नहीं रहते। 5वह दाखलता मैं हूँ और तुम उसकी
शाखाएँ हो। जो मुझमें रहता है, और मैं जिस में रहता हूँ
वह बहुत फलता है क्योंकि मेरे बिना तुम कुछ भी नहीं
कर सकते। 6यदि कोई मुझमें नहीं रहता तो वह टूटी
शाखा की तरह फेंक दिया जाता है और सूख जाता है।
फिर उन्हें बटोर कर आग में झोंक दिया जाता है और
उन्हें जला दिया जाता है।

7“यदि तुम मुझ में रहो, और मेरे उपदेश तुम में रहें,
तो जो कुछ तुम चाहते हो माँगो, वह तुम्हें मिलेगा।
8इससे मेरे परम पिता की महिमा होती है कि तुम बहुत
सफल होवो और मेरे अनुयायी रहो। 9जैसे परम पिता ने
मुझे प्रेम किया है, मैंने भी तुम्हें वैसे ही प्रेम किया है।
मेरे प्रेम में बने रहो। 10यदि तुम मेरे आदेशों का पालन
करोगे तो तुम मेरे प्रेम में बने रहोगे। वैसे ही जैसे मैं
अपने परम पिता के आदेशों को पालते हुए उसके प्रेम
में बना रहता हूँ। 11मैंने ये बातें तुमसे इसलिये कही हैं
कि मेरा आनन्द तुम में रहे और तुम्हारा आनन्द परिपूर्ण
हो जाये। यह मेरा आदेश है 12कि तुम आपस में प्रेम
करो, वैसे ही जैसे मैंने तुम से प्रेम किया है। 13बड़े से
बड़ा प्रेम जिसे कोई व्यक्ति कर सकता है, वह है अपने
मित्रों के लिए प्राण न्योछावर कर देना। 14जो आदेश
तुम्हें मैं देता हूँ, यदि तुम उन पर चलते रहो तो तुम मेरे
मित्र हो। 15अब से मैं तुम्हें ‘दास’ नहीं कहूँगा क्योंकि
कोई दास नहीं जानता कि उसका स्वामी क्या कर रहा
है बल्कि मैं तुम्हें ‘मित्र’ कहता हूँ। क्योंकि मैंने तुम्हें वह
हर बात बता दी है, जो मैंने अपने परम पिता से सुनी है।
16तुमने मुझे नहीं चुना, बल्कि मैंने तुम्हें चुना है और
नियुक्त किया है कि तुम जाओ और सफल बनो। मैं
चाहता हूँ कि तुम्हारी सफलता बनी रहे ताकि मेरे नाम
में जो कुछ तुम चाहो, परम पिता तुम्हें दे। 17मैं तुम्हें यह
आदेश दे रहा हूँ कि तुम एक दूसरे से प्रेम करो।

यीशु की चेतावनी

18“यदि संसार तुमसे बैर करता है तो याद रखो वह
तुमसे पहले मुझसे बैर करता है। 19यदि तुम जगत् के
होते तो जगत् तुम्हें अपनों की तरह प्यार करता पर तुम

जगत् के नहीं हो मैंनें तुम्हें जगत् में से चुन लिया है और
इसीलिए जगत् तुमसे बैर करता है। **20**मेरा वचन याद
रखो एक दास अपने स्वामी से बड़ा नहीं है। इसलिये
यदि उन्होंने मुझे यातनाएँ दी हैं तो वे तुम्हें भी यातनाएँ
देंगे। और यदि उन्होंने मेरा वचन माना तो वे तुम्हारा
वचन भी मानेंगे। **21**पर वे मेरे कारण तुम्हारे साथ ये
सब कुछ करेंगे क्योंकि वे उसे नहीं जानते जिसने मुझे
भेजा है। **22**यदि मैं न आता और उनसे बातें न करता तो
वे किसी भी पाप के दोषी न होते। पर अब अपने पाप
के लिए उनके पास कोई बहाना नहीं है। **23**जो मुझसे
बैर करता है वह परम पिता से बैर करता है। **24**यदि मैं
उनके बीच वे कार्य नहीं करता जो कभी किसी ने नहीं
किये तो वे पाप के दोषी न होते पर अब जब वे देख
चुके हैं तब भी मुझसे और मेरे परम पिता दोनों से बैर
रखते हैं। **25**किन्तु यह इसलिये हुआ कि उनके
व्यवस्था–विधान में जो लिखा है वह सच हो सके।
'उन्होंने बेकार ही मुझ से बैर किया है।'

26"जब वह सहायक (जो सत्य की आत्मा है और
परम पिता की ओर से आता है) तुम्हारे पास आयेगा
जिसे मैं परम पिता की ओर से भेजूँगा, वह मेरी ओर से
साक्षी देगा। **27**और तुम भी साक्षी दोगे क्योंकि तुम आदि
से ही मेरे साथ रहे हो।

16 "ये बातें मैंने इसलिये तुमसे कही हैं कि तुम्हारा
विश्वास न डगमगा जाये। **2**वे तुम्हें आराधना
सभा से निकाल देंगे। वास्तव में वह समय आ रहा है
जब तुम में से किसी को भी मार कर हर कोई सोचेगा
कि वह परमेश्वर की सेवा कर रहा है। **3**वे ऐसा
इसलिए करेंगे कि वे न तो परम पिता को जानते हैं
और न ही मुझे। **4**किन्तु मैंने तुमसे यह इसलिये कहा है
ताकि जब उनका समय आये तो तुम्हें याद रहे कि मैंने
उनके विषय में तुमको बता दिया था।

पवित्र आत्मा के कार्य

"आरम्भ में ये बातें मैंने तुम्हें नहीं बतायी थीं क्योंकि
मैं तुम्हारे साथ था। **5**किन्तु अब मैं उसके पास जा रहा
हूँ जिसने मुझे भेजा है और तुममें से मुझ से कोई नहीं
पूछेगा, 'तू कहाँ जा रहा है?' **6**क्योंकि मैंने तुम्हें ये बातें
बता दी हैं, तुम्हारे हृदय शोक से भर गये हैं। **7**किन्तु मैं
तुमसे सत्य कहता हूँ इसमें तुम्हारा भला है कि मैं जा
रहा हूँ। क्योंकि यदि मैं न जाऊँ तो सहायक तुम्हारे पास
नहीं आयेगा। किन्तु यदि मैं चला जाता हूँ तो मैं उसे
तुम्हारे पास भेज दूँगा। **8**और जब वह आयेगा तो पाप,
धार्मिकता और न्याय के विषय में जगत् के संदेह दूर
करेगा। **9**पाप के विषय में इसलिये कि वे मुझ में विश्वास
नहीं रखते, **10**धार्मिकता के विषय में इसलिये कि अब
मैं परम पिता के पास जा रहा हूँ। और तुम मुझे अब
और अधिक नहीं देखोगे। **11**न्याय के विषय में इसलिये
कि इस जगत के शासक को दोषी ठहराया जा चुका है।
12मुझे अभी तुमसे बहुत सी बातें कहनी हैं किन्तु तुम
अभी उन्हें सह नहीं सकते। **13**किन्तु जब सत्य का
आत्मा आयेगा तो वह तुम्हें पूर्ण सत्य की राह दिखायेगा
क्योंकि वह अपनी ओर से कुछ नहीं कहेगा। वह जो
कुछ सुनेगा वही बतायेगा। और जो कुछ होने वाला है
उसको प्रकट करेगा। **14**वह मेरी महिमा करेगा क्योंकि
जो मेरा है उसे लेकर वह तुम्हें बतायेगा। हर वस्तु जो
पिता की है, वह मेरी है। **15**इसीलिए मैंने कहा है कि जो
कुछ मेरा है वह उसे लेगा और तुम्हें बतायेगा।

शोक आनन्द में बदल जायेगा

16"कुछ ही समय बाद तुम मुझे और अधिक नहीं
देख पाओगे। और थोड़े समय बाद तुम मुझे फिर देखोगे।"

17तब उसके कुछ शिष्यों ने आपस में कहा, "यह
क्या है जो वह हमें बता रहा है, 'थोड़ी देर बाद तुम मुझे
नहीं देख पाओगे?' और 'थोड़े समय बाद तुम मुझे फिर
देखोगे?' और 'मैं परम पिता के पास जा रहा हूँ।'"

18फिर वे कहने लगे यह, "थोड़ी देर बाद क्या है!
जिसके बारे में वह बता रहा है। वह क्या कह रहा है
हम समझ नहीं रहे हैं।"

19यीशु समझ गया कि वे उससे प्रश्न करना चाहते
हैं। इसलिये उसने उनसे कहा, "क्या मैंने यह जो कहा
है, उस पर तुम आपस में सोच–विचार कर रहे हो,
'कुछ ही समय बाद तुम मुझे और अधिक नहीं देख
पाओगे।' और 'फिर थोड़े समय बाद तुम मुझे देखोगे?'
20मैं तुम्हें सत्य कहता हूँ, तुम विलाप करोगे और
रोओगे किन्तु यह जगत् प्रसन्न होगा। तुम्हें शोक होगा
किन्तु तुम्हारा शोक आनन्द में बदल जायेगा। **21**जब
कोई स्त्री जनने लगती है, तब उसे पीड़ा होती है क्योंकि
उसकी पीड़ा की घड़ी आ चुकी होती है। किन्तु जब वह
बच्चा जन चुकी होती है तो इस आनन्द से कि एक
व्यक्ति इस संसार में पैदा हुआ है वह आनन्दित होती है
और अपनी पीड़ा को भूल जाती है। **22**सो तुम सब भी
इस समय वैसे ही दुखी हो किन्तु मैं तुमसे फिर मिलूँगा
और तुम्हारे हृदय आनन्दित होंगे। और तुम्हारे आनन्द
को तुमसे कोई छीन नहीं सकेगा। **23**उस दिन तुम मुझसे
कोई प्रश्न नहीं पूछोगे। मैं तुमसे सत्य कहता हूँ मेरे नाम
में परम पिता से तुम जो कुछ भी माँगोगे वह उसे तुम्हें
देगा। **24**अब तक मेरे नाम में तुमने कुछ नहीं माँगा है।
माँगो, तुम पाओगे। ताकि तुम्हें भरपूर आनन्द हो।

जगत पर विजय

25"मैंने ये बातें तुम्हें दृष्टान्त देकर बतायी हैं। वह
समय आ रहा है जब मैं तुमसे दृष्टान्त दे– देकर और
अधिक समय बात नहीं करूँगा। बल्कि परम पिता के
विषय में खोल कर तुम्हें बताऊँगा। **26**उस दिन तुम मेरे
नाम में माँगोगे और मैं तुमसे यह नहीं कहता कि

तुम्हारी ओर से मैं परम पिता से प्रार्थना करूँगा। 27परम पिता स्वयं तुम्हें प्यार करता है क्योंकि तुमने मुझे प्यार किया है। और यह माना है कि मैं परम पिता से आया हूँ। 28मैं परम पिता से प्रकट हुआ और इस जगत् में आया। और अब मैं इस जगत् को छोड़कर परम पिता के पास जा रहा हूँ।"

29उसके शिष्यों ने कहा, "देख अब तू बिना किसी दृष्टान्त के खोल कर बता रहा है। 30अब हम समझ गये हैं कि तू सब कुछ जानता है। अब तुझे अपेक्षा नहीं है कि कोई तुझसे प्रश्न पूछे। इससे हमें यह विश्वास होता है कि तू परमेश्वर से प्रकट हुआ है।"

31यीशु ने इस पर उनसे कहा, "क्या तुम्हें अब विश्वास हुआ है? 32सुनो, समय आ रहा है, बल्कि आ ही गया है जब तुम सब तितर-बितर हो जाओगे और तुम में से हर कोई अपने-अपने घर लौट जायेगा और मुझे अकेला छोड़ देगा किन्तु मैं अकेला नहीं हूँ क्योंकि मेरा परम पिता मेरे साथ है।

33"मैंने ये बातें तुमसे इसलिये कहीं कि मेरे द्वारा तुम्हें शांति मिले। जगत् में तुम्हें यातना मिली है किन्तु साहस रखो, मैंने जगत् को जीत लिया है!"

अपने शिष्यों के लिए यीशु की प्रार्थना

17 ये बातें कहकर यीशु ने आकाश की ओर देखा और बोला, "हे परम पिता, वह घड़ी आ पहुँची है अपने पुत्र को महिमा प्रदान कर ताकि तेरा पुत्र तेरी महिमा कर सके। 2तूने उसे समूचे मनुष्य जाति पर अधिकार दिया है कि वह, हर उसको, जिसको तूने उसे दिया है, अनन्त जीवन दे। 3अनन्त जीवन यह है कि वे तुझ एकमात्र सच्चे परमेश्वर और यीशु मसीह को, जिसे तूने भेजा है, जानें। 4जो काम तूने मुझे सौंपे थे, उन्हें पूरा करके जगत् में मैंने तुझे महिमावान किया है। 5इसलिये अब तू अपने साथ मुझे भी महिमावान कर। हे परम पिता! वही महिमा मुझे दे जो जगत् से पहले, तेरे साथ मुझे प्राप्त थी।

6"जगत से जिन मनुष्यों को तूने मुझे दिया, मैंने उन्हें तेरे नाम का बोध कराया है। वे लोग तेरे थे किन्तु तूने उन्हें मुझे दिया और उन्होंने तेरे वचन का पालन किया। 7अब वे जानते हैं कि हर वह वस्तु जो तूने मुझे दी है, वह तुझ ही से आती है। 8मैंने उन्हें वे ही उपदेश दिये हैं जो तूने मुझे दिये थे और उन्होंने उनको ग्रहण किया। वे निश्चयपूर्वक जानते हैं कि मैं तुझसे ही आया हूँ। और उन्हें विश्वास हो गया है कि तूने मुझे भेजा है। 9मैं उनके लिये प्रार्थना कर रहा हूँ। मैं जगत के लिये प्रार्थना नहीं कर रहा हूँ बल्कि उनके लिए कर रहा हूँ जिन्हें तूने मुझे दिया है, क्योंकि वे तेरे हैं। 10वह सब कुछ जो मेरा है, वह तेरा है और जो तेरा है, वह मेरा है। और मैंने उनके द्वारा महिमा पायी है। 11मैं अब और अधिक समय जगत् में नहीं हूँ किन्तु वे जगत में हैं अब मैं तेरे पास आ रहा हूँ। हे पवित्र पिता अपने उस नाम की शक्ति से उनकी रक्षा कर जो तूने मुझे दिया है ताकि जैसे तू और मैं एक हैं, वे भी एक हो सकें। 12जब मैं उनके साथ था, मैंने तेरे उस नाम की शक्ति से उनकी रक्षा की, जो तूने मुझे दिया था। मैंने रक्षा की और उनमें से कोई भी नष्ट नहीं हुआ सिवाय उसके जो विनाश का पुत्र था ताकि शास्त्र का कहना सच हो।

13"अब मैं तेरे पास आ रहा हूँ किन्तु ये बातें मैं जगत् में रहते हुए कह रहा हूँ ताकि वे अपने हृदयों में मेरे पूर्ण आनन्द को पा सकें। 14मैंने तेरा वचन उन्हें दिया है पर संसार ने उनसे घृणा की क्योंकि वे सांसारिक नहीं हैं। वैसे ही जैसे मैं संसार का नहीं हूँ। 15मैं यह प्रार्थना नहीं कर रहा हूँ कि तू उन्हें संसार से निकाल ले बल्कि यह कि तू उनकी दुष्ट शैतान से रक्षा कर। 16वे संसार के नहीं हैं, वैसे ही जैसे मैं संसार का नहीं हूँ। 17सत्य के द्वारा तू उन्हें अपनी सेवा के लिये समर्पित कर। तेरा वचन सत्य है। 18जैसे तूने मुझे इस जगत् में भेजा है, वैसे ही मैंने उन्हें जगत में भेजा है। 19मैं उनके लिए अपने को तेरी सेवा में अर्पित कर रहा हूँ ताकि वे भी सत्य के द्वारा स्वयं को तेरी सेवा में अर्पित करें।

20"किन्तु मैं केवल उन ही के लिये प्रार्थना नहीं कर रहा हूँ बल्कि उनके लिये भी जो इनके उपदेशों द्वारा मुझ में विश्वास करेंगे। 21वे सब एक हों। वैसे ही जैसे हे परम पिता तू मुझ में है और मैं तुझ में। वे भी हममें एक हों। ताकि जगत विश्वास करे कि मुझे तूने भेजा है। 22वह महिमा जो तूने मुझे दी है, मैंने उन्हें दी है; ताकि वे भी वैसे ही एक हो सकें जैसे हम एक हों। 23मैं उनमें होऊँगा और तू मुझमें होगा, जिससे वे पूर्ण एकता को प्राप्त हों और जगत जान जाये कि मुझे तूने भेजा है और तूने उन्हें भी वैसे ही प्रेम किया है जैसे तू मुझे प्रेम करता है।

24"हे परम पिता! जो लोग तूने मुझे सौंपे हैं, मैं चाहता हूँ कि जहाँ मैं हूँ, वे भी मेरे साथ हों ताकि वे मेरी उस महिमा को देख सकें जो तूने मुझे दी है। क्योंकि सृष्टि की रचना से भी पहले तूने मुझसे प्रेम किया है। 25हे धार्मिक-पिता, जगत तुझे नहीं जानता किन्तु मैंने तुझे जान लिया है। और मेरे शिष्य जानते हैं कि मुझे तूने भेजा है। 26न केवल मैंने तेरे नाम का उन्हें बोध कराया है बल्कि मैं इसका बोध कराता भी रहूँगा ताकि वह प्रेम जो तूने मुझ पर दर्शाया है उनमें भी हो। और मैं भी उनमें रहूँ।"

यीशु का बंदी बनाया जाना

(मत्ती 26:47-56; मरकुस 14:43-50; लूका 22:47-53)

18 यीशु यह कहकर अपने शिष्यों के साथ छोटी नदी किद्रोन के पार एक बगीचे में चला गया।

2धोखे से उसे पकड़वाने वाला यहूदा भी उस जगह
को जानता था क्योंकि यीशु वहाँ प्राय: अपने शिष्यों से
मिला करता था। 3इसलिये यहूदा रोमी सिपाहियों की
एक टुकड़ी और महायाजकों और फरीसियों के भेजे
लोगों और मन्दिर के पहरेदारों के साथ मशालें दीपक
और हथियार लिये वहाँ आ पहुँचा।

4फिर यीशु जो सब कुछ जानता था कि उसके साथ
क्या होने जा रहा है, आगे आया और उनसे बोला, “तुम
किसे खोज रहे हो?”

5उन्होंने उसे उत्तर दिया, “यीशु नासरी को।”

यीशु ने उनसे कहा, “वह मैं हूँ।” (तब उसे धोखे से
पकड़वाने वाला यहूदा भी वहाँ खड़ा था।) 6जब
उसनेउनसे कहा, “वह मैं हूँ” तो वे पीछे हटे और धरती
पर गिर पड़े।

7इस पर एक बार फिर यीशु ने उनसे पूछा, “तुम
किसे खोज रहे हो?” वे बोले, “यीशु नासरी को।”

8यीशु ने उत्तर दिया, “मैंनें तुमसे कहा, वह मैं ही हूँ।
यदि तुम मुझे खोज रहे हो तो इन लोगों को जाने दो।”
9यह उसने इसलिये कहा कि जो उसने कहा था, वह
सच हो, “मैंने उनमें से किसी को भी नहीं खोया, जिन्हें
तूने मुझे सौंपा था।”

10फिर शमौन पतरस ने, जिसके पास तलवार थी,
अपनी तलवार निकाली और महायाजक के दास का
दाहिना कान काटते हुए उसे घायल कर दिया। (उस
दास का नाम मलखुस था।) 11फिर यीशु ने पतरस से
कहा, “अपनी तलवार म्यान में रख। क्या मैं यातना का
वह प्याला न पीऊँ जो परम पिता ने मुझे दिया है?”

यीशु का हन्ना के सामने लाया जाना

(मत्ती 26:57-58; मरकुस 14:53-54; लूका 22:54

12फिर रोमी टुकड़ी के सिपाहियों और उनके सूबेदारों
तथा यहूदियों के मंदिर के पहरेदारों ने यीशु को बंदी
बना लिया। 13और उसे बाँध कर पहले हन्ना के पास ले
गये जो उस साल के महायाजक कैफा का ससुर था।
14यह कैफा वही व्यक्ति था जिसने यहूदी नेताओं को
सलाह दी थी कि सब लोगों के लिए एक का मरना
अच्छा है।

पतरस का यीशु को पहचानने से इन्कार

(मत्ती 26:69-70; मरकुस 14:66-68; लूका 22:55-57)

15शमौन पतरस तथा एक और शिष्य यीशु के पीछे
हो लिये। महायाजक इस शिष्य को अच्छी तरह जानता
था इसलिए वह यीशु के साथ महायाजक के आँगन में
घुस गया। 16किन्तु पतरस बाहर द्वार के पास ही ठहर
गया। फिर महायाजक की जान पहचान वाला दूसरा
शिष्य बाहर गया और द्वारपालिन से कह कर पतरस
को भीतर ले आया। 17इस पर उस दासी ने जो द्वारपालिन
थी कहा, “हो सकता है कि तू भी यीशु का ही शिष्य
है?” पतरस ने उत्तर दिया, “नहीं, मैं नहीं हूँ।”

18क्योंकि ठंड बहुत थी दास और मंदिर के पहरेदार
आग जलाकर वहाँ खड़े ताप रहे थे। पतरस भी उनके
साथ वहीं खड़ा था और ताप रहा था।

महायाजक की यीशु से पूछताछ

(मत्ती 26:59-66; मरकुस 14:55-64; लूका 22:66-71)

19फिर महायाजक ने यीशु से उसके शिष्यों और
उसकी शिक्षा के बारे में पूछा। 20यीशु ने उसे उत्तर
दिया, “मैंने सदा लोगों के बीच हर किसी से खुल कर
बात की है। सदा मैंने प्रार्थना सभाओं में और मन्दिर में,
जहाँ सभी यहूदी इकट्ठे होते हैं, उपदेश दिया है। मैंने
कभी भी छिपा कर कुछ नहीं कहा है। 21फिर तू मुझ
से क्यों पूछ रहा है? मैंने क्या कहा है उनसे पूछ जिन्होंने
मुझे सुना है। मैंनें क्या कहा, निश्चय ही वे जानते हैं।”

22जब उसने यह कहा तो मन्दिर के एक पहरेदार ने,
जो वहीं खड़ा था, यीशु को एक थप्पड़ मारा और बोला,
“तूने महायाजक को ऐसे उत्तर देने की हिम्मत कैसेकी?”

23यीशु ने उसे उत्तर दिया, “यदि मैंने कुछ बुरा कहा
है तो प्रमाणित कर और बता कि उसमें बुरा क्या था,
और यदि मैंने ठीक कहा है तो तू मुझे क्यों मारता है?”

24फिर हन्ना ने उसे बँधे हुए ही महायाजक कैफा के
पास भेज दिया।

पतरस का यीशु को पहचानने से फिर इन्कार

(मत्ती 26:71-75; मरकुस 14:69-72; लूका 22:58-62)

25जब शमौन पतरस खड़ा हुआ आग ताप रहा था तो
उससे पूछा गया, “क्या यह सम्भव है कि तू भी उसका
एक शिष्य है?” उसने इससे इन्कार किया। वह बोला,
“नहीं मैं नहीं हूँ।”

26महायाजक के एक सेवक ने जो उस व्यक्ति का
सम्बन्धी था जिसका पतरस ने कान काटा था, पूछा,
“बता क्या मैंने तुझे उसके साथ बगीचे में नहीं देखा
था?”

27इस पर पतरस ने एक बार फिर इन्कार किया।
और तभी मुर्गे ने बाँग दी।

यीशु का पिलातुस के सामने लाया जाना

(मत्ती 27:1-2; मरकुस 15:1-20; लूका 23:1-25)

28फिर वे यीशु को कैफा के घर से रोमी राज्यपाल
के महल में ले गये। सुबह का समय था। यहूदी लोग
राज्यपाल के भवन में आप नहीं जाना चाहते थे कि
कहीं वे अपवित्र* न हो जायें। और फ़सह का भोजन

अपवित्र यहूदी यह मानते थे कि किसी ग़ैर यहूदी के घर में जाने से उनकी पवित्रता नष्ट हो जाती है। देखें यूहन्ना 11:55

न खा सकें। 29तब पिलातुस उनके पास बाहर आया और बोला, "इस व्यक्ति के ऊपर तुम क्या दोष लगाते हो?"

30उत्तर में उन्होंने उससे कहा, "यदि यह अपराधी न होता तो हम इसे तुम्हें न सौंपते।" 31इस पर पिलातुस ने उनसे कहा, "इसे तुम ले जाओ और अपनी व्यवस्था के विधान के अनुसार इसका न्याय करो।"

यहूदियों ने उससे कहा, "हमें किसी को प्राणदण्ड देने का अधिकार नहीं है।" 32(यह इसलिए हुआ कि यीशु ने जो बात उसे कैसी मृत्यु मिलेगी, यह बताते हुए कही थी, सत्य सिद्ध हो।)

33तब पिलातुस राज्यपाल के महल में वापस चला गया। और यीशु को बुला कर उससे पूछा, "क्या तू यहूदियों का राजा है?"

34यीशु ने उत्तर दिया, "यह बात क्या तू अपने आप कह रहा है या मेरे बारे में यह औरों ने तुझसे कही है?"

35पिलातुस ने उत्तर दिया, "क्या तू सोचता है कि मैं यहूदी हूँ? तेरे लोगों और महायाजकों ने तुझे मेरे हवाले किया है। तूने क्या किया है?"

36यीशु ने उत्तर दिया, "मेरा राज्य इस जगत् का नहीं है। यदि मेरा राज्य इस जगत् का होता तो मेरी प्रजा मुझे यहूदियों को सौंपे जाने से बचाने के लिए युद्ध करती। किन्तु वास्तव में मेरा राज्य यहाँ का नहीं है।"

37इस पर पिलातुस ने उससे कहा, "तो तू राजा है?"

यीशु ने उत्तर दिया, "तू कहता है कि मैं राजा हूँ। मैं इसीलिए पैदा हुआ हूँ और इसी प्रयोजन से मैं इस संसार में आया हूँ कि सत्य की साक्षी दूँ। हर वह व्यक्ति जो सत्य के पक्ष मैं है, मेरा वचन सुनता है।"

38पिलातुस ने उससे पूछा, "सत्य क्या है?" ऐसा कह कर वह फिर यहूदियों के पास बाहर गया और उनसे बोला, "मैं उसमें कोई खोट नहीं पा सका हूँ, 39और तुम्हारी यह रीति है कि फ़सह पर्व के अवसर पर मैं तुम्हारे लिए किसी एक को मुक्त कर दूँ। तो क्या तुम चाहते हो कि मैं इस 'यहूदियों के राजा' को तुम्हारे लिये छोड़ दूँ?"

40एक बार वे फिर चिल्लाये, "इसे नहीं, बल्कि बरअब्बा को छोड़ दो!" (बरअब्बा एक बाग़ी था।)

यीशु को मृत्यु-दण्ड

19 तब पिलातुस ने यीशु को पकड़वा कर कोड़े लगवाये। 2फिर सैनिकों ने कँटीली टहनियों को मोड़ कर एक मुकुट बनाया और उसके सिर पर रख दिया। और उसे बैंजनी रंग के कपड़े पहनाये। 3और उसके पास आ-आकर कहने लगे, "यहूदियों का राजा जीता रहे" और फिर उसे थप्पड़ मारने लगे।

4पिलातुस एक बार फिर बाहर आया और उनसे बोला, "देखो, मैं तुम्हारे पास उसे फिर बाहर ला रहा हूँ ताकि तुम जान सको कि मैं उसमें कोई खोट नहीं पा सका।" 5फिर यीशु बाहर आया। वह काँटों का मुकुट और बैंजनी रंग का चोगा पहने हुए था। तब पिलातुस ने कहा, "यह रहा वह पुरुष।"

6जब उन्होंने उसे देखा तो महायाजकों और मंदिर के पहरेदारों ने चिल्ला कर कहा, "इसे क्रूस पर चढ़ा दो! इसे क्रूस पर चढ़ा दो!"

पिलातुस ने उससे कहा, "तुम इसे ले जाओ और क्रूस पर चढ़ा दो, मैं इसमें कोई खोट नहीं पा सका हूँ।"

7यहूदियों ने उसे उत्तर दिया, "हमारी व्यवस्था है जो कहती है, इसे मरना होगा क्योंकि इसने परमेश्वर का पुत्र होने का दावा किया है।"

8अब जब पिलातुस ने उन्हें यह कहते सुना तो वह बहुत डर गया। 9और फिर राज्यपाल के महल के भीतर जाकर यीशु से कहा, "तू कहाँ से आया है? किन्तु यीशु ने उसे उत्तर नहीं दिया।"

10फिर पिलातुस ने उससे कहा, "क्या तू मुझसे बात नहीं करना चाहता? क्या तू नहीं जानता कि मैं तुझे छोड़ने का अधिकार रखता हूँ और तुझे क्रूस पर चढ़ाने का भी मुझे अधिकार है।"

11यीशु ने उसे उत्तर दिया, "तुम्हें तब तक मुझ पर कोई अधिकार नहीं हो सकता था जब तक वह तुम्हें परम पिता द्वारा नहीं दिया गया होता। इसलिये जिस व्यक्ति ने मुझे तेरे हवाले किया है, तुझसे भी बड़ा पापी है।"

12यह सुन कर पिलातुस उसे छोड़ने का कोई उपाय ढूँढने का यत्न करने लगा। किन्तु यहूदी चिल्लाये, "यदि तू इसे छोड़ता है, तो तू कैसर का मित्र नहीं है, कोई भी जो अपने आप को राजा होने का दावा करता है, वह कैसर का विरोधी है।"

13जब पिलातुस ने ये शब्द सुने तो वह यीशु को बाहर उस स्थान पर ले गया जो "पत्थर का चबूतरा" कहलाता था। (इसे इब्रानी भाषा में "गब्बता" कहा गया है।) और वहाँ न्याय के आसन पर बैठा। 14यह फ़सह सप्ताह की तैयारी का दिन था।* लगभग दोपहर हो रही थी। पिलातुस ने यहूदियों से कहा, "यह रहा तुम्हारा राजा।"

15वे फिर चिल्लाये, "इसे ले जाओ। इसे ले जाओ। इसे क्रूस पर चढ़ा दो।" पिलातुस ने उनसे कहा, "क्या तुम चाहते हो तुम्हारे राजा को मैं क्रूस पर चढ़ाऊँ?"

इस पर महायाजकों ने उत्तर दिया, "कैसर को छोड़कर हमारा कोई दूसरा राजा नहीं है!"

16फिर पिलातुस ने उसे क्रूस पर चढ़ाने के लिए उन्हें सौंप दिया।

"यह फसह ... दिन था" अर्थात् शुक्रवार जब यहूदी सब्त की तैयारी करते थे।

यीशु का क्रूस पर चढ़ाया जाना

(मत्ती 27:32-44; मरकुस 15:21-32 लूका 23:26-43)

इस तरह उन्होंने यीशु को हिरासत में ले लिया।
17अपना क्रूस उठाये हुए वह उस स्थान पर गया जिसे,
"खोपड़ी का स्थान" कहा जाता था। (इसे इब्रानी भाषा
में "गुलगुता" कहते थे।) 18वहाँ से उन्होंने उसे दो अन्य
के साथ क्रूस पर चढ़ाया। एक इधर, दूसरा उधर और
बीच में यीशु। 19पिलातुस ने दोषपत्र क्रूस पर लगा दिया।
इसमें लिखा था, "यीशु नासरी, यहूदियों का राजा" 20बहुत
से यहूदियों ने उस दोषपत्र को पढ़ा क्योंकि जहाँ यीशु
को क्रूस पर चढ़ाया गया था, वह स्थान नगर के पास
ही था। और वह ऐलान इब्रानी, युनानी और लातीनी में
लिखा था। तब प्रमुख यहूदी नेता पिलातुस से कहने
लगे–21यहूदियों का राजा मत कहो, "बल्कि कहो, 'उसने
कहा था कि मैं यहूदियों का राजा हूँ।'"

22पिलातुस ने उत्तर दिया, "मैंने जो लिख दिया, सो
लिख दिया।" 23जब सिपाही यीशु को क्रूस पर चढ़ा चुके
तो उन्होंने उसके वस्त्र लिए और उन्हें चार भागों में
बाँट दिया। हर भाग एक सिपाही के लिये। उन्होंने कुर्ता
भी उतार लिया। क्योंकि वह कुर्ता बिना सिलाई के
ऊपर से नीचे तक बुना हुआ था। 24इसलिये उन्होंने
आपस में कहा, "इसे फाड़ें नहीं बल्कि इसे कौन ले,
इसके लिए पर्ची डाल लें।" ताकि शास्त्र का यह वचन
पूरा हो, "उन्होंने मेरे कपड़े आपस में बाँट लिये और
मेरे वस्त्र के लिए पर्ची डाली।" *भजन संहिता 22:18*

इसलिए सिपाहियों ने ऐसा ही किया।

25यीशु के क्रूस के पास उसकी माँ, मौसी क्लोपास
की पत्नी मरियम, और मरियम मगदलिनी खड़ी थीं।
26यीशु ने जब अपनी माँ और अपने प्रिय शिष्य को पास
ही खड़े देखा तो अपनी माँ से कहा, "प्रिय महिला, यह
रहा तेरा बेटा।" 27फिर वह अपने शिष्य से बोला, "यह
रही तेरी माँ।" और फिर उसी समय से वह शिष्य उसे
अपने घर ले गया।

यीशु की मृत्यु

(मत्ती 27:45-56; मरकुस 15:33-41; लूका 23:44-49)

28इसके बाद यीशु ने जान लिया कि सब कुछ पूरा हो
चुका है। फिर इसलिए कि शास्त्र सत्य सिद्ध हो उसने
कहा, "मैं प्यासा हूँ।" 29वहाँ सिरके से भरा एक बर्तन
रखा था। इसलिये उन्होंने एक स्पंज को सिरके मैं पूरी
तरह डुबो कर हिस्सप अर्थात् जूफे की टहनी पर रखा
और ऊपर उठा कर, उसके मुँह से लगाया। 30फिर
जब यीशु ने सिरका ले लिया तो वह बोला, पूरा हुआ।"
तब उसने अपना सिर झुका दिया और प्राण त्याग दिये।

31यह फ़सह की तैयारी का दिन था। सब्त के दिन
उनके शव क्रूस पर न लटके रहें क्योंकि सब्त का वह
दिन बहुत महत्त्वपूर्ण था इसके लिए यहूदियों ने पिलातुस
से कहा कि वह आज्ञा दे कि उनकी टाँगें तोड़ दी जाएँ
और उनके शव वहाँ से हटा दिए जाएँ। 32तब सिपाही
आये और उनमें से पहले, पहले की और फिर दूसरे
व्यक्ति की, जो उसके साथ क्रूस पर चढ़ाये गये थे, टाँगें
तोड़ी। 33पर जब वे यीशु के पास आये, उन्होंने देखा कि
वह पहले ही मर चुका है। इसलिए उन्होंने उसकी टाँगें
नहीं तोड़ीं 34पर उनमें से एक सिपाही ने यीशु के पंजर
में अपना भाला बेधा जिससे तत्काल ही खून और पानी
बह निकला। 35(जिसने यह देखा था उसने साक्षी दी;
और उसकी साक्षी सच है, वह जानता है कि वह सच
कह रहा है ताकि तुम लोग विश्वास करो।) 36यह
इसलिए हुआ कि शास्त्र का वचन पूरा हो कि "उसकी
कोई भी हड्डी तोड़ी नहीं जायेगी।" 37और धर्मशास्त्र में
लिखा है, "जिसे उन्होंने भाले से बेधा, वे उसकी ओर
ताकेंगे।"*

यीशु की अन्त्येष्टि

(मत्ती 27:57-61; मरकुस 15:42-47; लूका 23:50-56)

38इसके बाद अरमतियाह के यूसुफ़ ने जो यीशु का
एक अनुयायी था किन्तु यहूदियों के डर से इसे छिपाये
रखता था, पिलातुस से विनती की कि उसे यीशु के शव
को वहाँ से ले जाने की अनुमति दी जाये। पिलातुस ने
उसे अनुमति दे दी। सो वह आकर उसका शव ले गया।
39निकुदेमुस भी, जो यीशु के पास रात को पहले आया
था, वहाँ कोई तीस किलो मिला हुआ गंधरस और
एलवा लेकर आया। फिर वे यीशु के शव को ले गये
40और यहूदियों के शव को गाड़ने की व्यवस्था के
अनुसार उसे सुगंधित सामग्री के साथ कफ़न में लपेट
दिया। 41जहाँ यीशु को क्रूस पर चढ़ाया गया था, वहाँ
एक बगीचा था। और उस बगीचे में एक नयी कब्र थी
जिसमें अभी तक किसी को रखा नहीं गया था। 42क्योंकि
वह सब्त की तैयारी का दिन शुक्रवार था और वह
कब्र बहुत पास थी, इसलिये उन्होंने यीशु को उसी में
रख दिया।

यीशु की क़ब्र खाली

(मत्ती 28:1-10; मरकुस 16:1-8; लूका 24:1-12)

20 सप्ताह के पहले दिन सुबह अन्धेरा रहते मरियम
मगदलिनी कब्र पर आयी। और उसने देखा
कि क़ब्र से पत्थर हटा हुआ है। 2फिर वह दौड़ कर
शमौन पतरस और उस दूसरे शिष्य के पास जो यीशु
का प्रिय था, पहुँची। और उनसे बोली, "वे प्रभु को क़ब्र
से निकाल कर ले गये हैं। और हमें नहीं पता कि
उन्होंने उसे कहाँ रखा है।"

"जिसे ... ताकेंगे" जकर्या. 12:10

3फिर पतरस और वह दूसरा शिष्य वहाँ से क़ब्र को
चल पड़े। 4वे दोनों साथ-साथ दौड़ रहे थे पर दूसरा
शिष्य पतरस से आगे निकल गया और क़ब्र पर पहले
जा पहुँचा। 5उसने नीचे झुककर देखा कि वहाँ
कफ़न के कपड़े पड़े हैं। किन्तु वह भीतर नहीं गया।
6तभी शमौन पतरस भी, जो उसके पीछे आ रहा था,
आ पहुँचा। और क़ब्र के भीतर चला गया। उसने
देखा कि वहाँ कफ़न के कपड़े पड़े हैं 7और वह
कपड़ा जो गाड़ते समय उसके सिर पर था कफ़न के
साथ नहीं, बल्कि उससे अलग एक स्थान पर तह
करके रखा हुआ है। 8फिर दूसरा, शिष्य भी जो क़ब्र
पर पहले पहुँचा था, भीतर गया। उसने देखा और
विश्वास किया। 9(वे अब भी शास्त्र के इस वचन को
नहीं समझे थे कि उसका मरे हुओं में से जी उठना
निश्चित है।)

मरियम मगदलिनी को यीशु ने दर्शन दिये

(मरकुस 16:9-11)

10फिर वे शिष्य अपने घरों को वापस लौट गये।
11मरियम रोती बिलखती कब्र के बाहर खड़ी थी।
रोते-बिलखते वह क़ब्र में अंदर झाँकने के लिये नीचे
झुकी। 12जहाँ यीशु का शव रखा था वहाँ उसने श्वेत
वस्त्र धारण किये, दो स्वर्गदूत, एक सिरहाने और दूसरा
पैताने, बैठे देखे।

13उन्होंने उससे पूछा, "हे स्त्री, तू क्यों विलाप कर
रही है?"

उसने उत्तर दिया, "वे मेरे प्रभु को उठा ले गये हैं
और मुझे पता नहीं कि उन्होंने उसे कहाँ रखा है?"
14इतना कह कर वह मुड़ी और उसने देखा कि वहाँ
यीशु खड़ा है। यद्यपि वह जान नहीं पायी कि वह यीशु
था।

15यीशु ने उससे कहा, "हे स्त्री, तू क्यों रो रही है? तू
किसे खोज रही है?" यह सोचकर कि वह माली है,
उसने उससे कहा, "श्रीमान, यदि कहीं तुमने उसे उठाया
है तो मुझे बताओ तुमने उसे कहाँ रखा है? मैं उसे ले
जाऊँगी।"

16यीशु ने उससे कहा, "मरियम!" वह पीछे मुड़ी और
इब्रानी में कहा, "रब्बूनी।" (अर्थात् "हे गुरु।")

17यीशु ने उससे कहा, "मुझे मत छू क्योंकि मैं अभी
तक परम पिता के पास ऊपर नहीं गया हूँ। बल्कि मेरे
भाइयों के पास जा और उन्हें बता, "मैं अपने परम पिता
और तुम्हारे परम पिता तथा अपने परमेश्वर और
तुम्हारे परमेश्वर के पास ऊपर जा रहा हूँ।"

18मरियम मगदलिनी यह कहती हुई शिष्यों के पास
आई, "मैंने प्रभु को देखा है, और उसने मुझे ये बातें
बताई हैं।"

शिष्यों को दर्शन देना

(मत्ती 28:16-20; मरकुस 16:14-18; लूका 24:36-49)

19उसी दिन शाम को, जो सप्ताह का पहला दिन था,
उसके शिष्य यहूदियों के डर के कारण दरवाज़े बंद
किये हुए थे। तभी यीशु वहाँ आकर उनके बीच खड़ा
हो गया और उनसे बोला, "तुम्हें शांति मिले।" 20इतना
कह चुकने के बाद उसने उन्हें अपने हाथ और अपनी
बगल दिखाई। शिष्यों ने जब प्रभु को देखा तो वे बहुत
प्रसन्न हुए।

21तब यीशु ने उनसे फिर कहा, "तुम्हें शांति मिले।
वैसे ही जैसे परम पिता ने मुझे भेजा है, मैं भी तुम्हें भेज
रहा हूँ।" 22यह कह कर उसने उन पर फूँक मारी और
उनसे कहा, "पवित्र आत्मा को ग्रहण करो। 23जिस
किसी भी व्यक्ति के पापों को तुम क्षमा करते हो, उन्हें
क्षमा मिलती है और जिनके पापों को तुम क्षमा नहीं
करते, वे बिना क्षमा पाए रहते हैं।"

यीशु का थोमा को दर्शन देना

24थोमा जो बारहों में से एक था और दिदिमस अर्थात्
जुड़वाँ कहलाता था, जब यीशु आया था तब उनके साथ
न था। 25दूसरे शिष्य उससे कह रहे थे, "हमने प्रभु को
देखा है।" किन्तु उसने उनसे कहा, "जब तक मैं उसके
हाथों में कीलों के निशान न देख लूँ और उनमें अपनी
उँगली न डाल लूँ तथा उसके पंजर में अपना हाथ न
डाल लूँ, तब तक मुझे विश्वास नहीं होगा।"

26आठ दिन बाद उसके शिष्य एक बार फिर घर के
भीतर थे। और थोमा उनके साथ था। (यद्यपि दरवाज़े
पर ताला पड़ा था।) यीशु आया और उनके बीच खड़ा
होकर बोला, "तुम्हें शांति मिले।" 27फिर उसने थोमा से
कहा, "हाँ अपनी उँगली डाल और मेरे हाथ देख,
अपना हाथ फैला कर मेरे पंजर में डाल। संदेह करना
छोड़ और विश्वास कर।"

28उत्तर देते हुए थोमा बोला, "हे मेरे प्रभु, हे मेरे
परमेश्वर!" 29यीशु ने उससे कहा, "तूने मुझे देखकर,
मुझमें विश्वास किया है। किन्तु धन्य वे हैं जो बिना देखे
विश्वास रखते हैं।"

यह पुस्तक यूहन्ना ने क्यों लिखी

30यीशु ने और भी अनेक आश्चर्य चिह्न अपने
अनुयायियों को दर्शाए जो इस पुस्तक में नहीं लिखे हैं।
31और जो बातें यहाँ लिखी हैं, वे इसलिए हैं कि तुम
विश्वास करो कि यीशु ही परमेश्वर का पुत्र, मसीह है।
और इसलिये कि विश्वास करते हुए उसके नाम से तुम
जीवन पाओ।

यीशु झील पर प्रकट हुआ

21 इसके बाद झील तिबिरियास पर यीशु ने शिष्यों
के सामने फिर अपने आपको प्रकट किया।

उसने अपने आपको इस तरह प्रकट किया। 2शमौन
पतरस, थोमा (जो जुड़वा कहलाता था) गलील के काना
का नतनएल, जब्दी के बेटे और यीशु के दो अन्य
शिष्य वहाँ इकट्ठे थे। 3शमौन पतरस ने उनसे कहा, “मैं
मछली पकड़ने जा रहा हूँ।”

वे उससे बोले, “हम भी तेरे साथ चल रहे हैं।” तो वे
उसके साथ चल दिये और नाव में बैठ गये। पर उस
रात वे कुछ नहीं पकड़ पाये।

4अब तक सुबह हो चुकी थी। तभी वहाँ यीशु किनारे
पर आ खड़ा हुआ। किन्तु शिष्य जान नहीं सके कि वह
यीशु है। 5फिर यीशु ने उनसे कहा, “बालकों तुम्हारे
पास कोई मछली है?” उन्होंने उत्तर दिया, “नहीं।”

6फिर उसने कहा, “नाव की दाहिनी तरफ़ जाल
फेंको तो तुम्हें कुछ मिलेगा।” सो उन्होंने जाल फेंका
किन्तु बहुत अधिक मछलियों के कारण वे जाल को
वापस खेंच नहीं सके।

7फिर यीशु के प्रिय शिष्य ने पतरस से कहा, “यह तो
प्रभु है।” जब शमौन ने यह सुना कि वह प्रभु है तो
उसने अपना बाहर पहनने का वस्त्र कस लिया (क्योंकि
वह नंगा था।) और पानी में कूद पड़ा। 8किन्तु दूसरे
शिष्य मछलियों से भरा हुआ जाल खेंचते हुए नाव से
किनारे पर आये (क्योंकि वे धरती से अधिक दूर नहीं
थे, उनकी दूरी कोई सौ मीटर की थी।)

9जब वे किनारे आए उन्होंने वहाँ दहकते कोयलों
की आग जलती देखी। उस पर मछली और रोटी पकाने
को रखी थी। 10यीशु ने उनसे कहा, “तुमने अभी जो
मछलियाँ पकड़ी हैं, उनमें से कुछ ले आओ।”

11फिर शमौन पतरस नाव पर गया और 153 बड़ी
मछलियों से भरा हुआ जाल किनारे पर खींचा। जाल में
यद्यपि इतनी अधिक मछलियाँ थीं, फिर भी जाल फटा
नहीं।

12यीशु ने उनसे कहा, “यहाँ आओ और भोजन
करो।” उसके शिष्यों में से किसी को साहस नहीं हुआ
कि वह उससे पूछे, “तू कौन है?” क्योंकि वे जान गये
थे कि वह प्रभु है। 13यीशु आगे बढ़ा। उसने रोटी ली
और उन्हें दे दी और ऐसे ही मछलियाँ भी दीं। 14अब यह
तीसरा मोका था जब मरे हुओं में से जी उठने के बाद
यीशु अपने शिष्यों के सामने प्रकट हुआ था।

यीशु की पतरस से बातचीत

15जब वे भोजन कर चुके तो यीशु ने शमौन पतरस
से कहा, “यूहन्ना के पुत्र शमौन, जितना प्रेम ये मुझ से
करते हैं, क्या तू मुझसे उससे अधिक प्रेम करता है?”

पतरस ने यीशु से कहा, “हाँ प्रभु, तू जानता है कि मैं
तुझे प्रेम करता हूँ।”

यीशु ने पतरस से कहा, “मेरे मेमनो* की रखवाली
कर।”

16वह उससे दोबारा बोला, “यूहन्ना के पुत्र शमौन,
क्या तू मुझे प्रेम करता है?” पतरस ने यीशु से कहा,
“हाँ प्रभु, तू जानता है कि मैं तुझे प्रेम करता हूँ।”

यीशु ने पतरस से कहा, “मेरी भेड़ों की रखवालीकर।”

17यीशु ने फिर तीसरी बार पतरस से कहा, “यूहन्ना
के पुत्र शमौन, क्या तू मुझे प्रेम करता है?”

पतरस बहुत व्यथित हुआ कि यीशु ने उससे तीसरी
बार यह पूछा, “क्या तू मुझसे प्रेम करता है?” सो पतरस
ने यीशु से कहा, “हे प्रभु, तू सब कुछ जानता है, तू
जानता है कि मैं तुझसे प्रेम करता हूँ!”

यीशु ने उससे कहा, “मेरी भेड़ों को चरा। 18मैं तुझसे
सत्य कहता हूँ, जब तू जवान था, तब तू अपनी कमर
पर फेंटा कस कर, जहाँ चाहता था, चला जाता था। पर
जब तू बूढ़ा होगा, तो हाथ पसारेगा और कोई दूसरा तुझे
बाँधकर जहाँ तू नहीं जाना चाहता, वहाँ ले जायेगा।”

19(उसने यह दर्शाने के लिए ऐसा कहा कि वह कैसी
मृत्यु से परमेश्वर की महिमा करेगा।) इतना कहकर
उसने उससे कहा, “मेरे पीछे चला आ!”

20पतरस पीछे मुड़ा और देखा कि वह शिष्य जिसे
यीशु प्रेम करता था, उनके पीछे आ रहा है। (यह वही
था जिसने भोजन करते समय उसकी छाती पर झुककर
पूछा था, “हे प्रभु, वह कौन है, जो तुझे धोखे से
पकड़वायेगा?”) 21सो जब पतरस ने उसे देखा तो वह
यीशु से बोला, “हे प्रभु, इसका क्या होगा?”

22यीशु ने उससे कहा, “यदि मैं यह चाहूँ कि जब तक
मैं आऊँ यह यहीं रहे, तो तुझे क्या? तू मेरे पीछे चला
आ।”

23इस तरह यह बात भाइयों में यहाँ तक फैल गयी
कि वह शिष्य नहीं मरेगा। यीशु ने यह नहीं कहा था
कि वह नहीं मरेगा। बल्कि यही कहा था, “यदि मैं यह
चाहूँ कि जब तक मैं आऊँ, यह यहीं रहे, तो तुझे
क्या?”

24यही वह शिष्य है जो इन बातों की साक्षी देता है
और जिसने ये बातें लिखी हैं। हम जानते हैं कि उसकी
साक्षी सच है।

25यीशु ने और भी बहुत से काम किये। यदि एक-एक
करके वे सब लिखे जाते तो मैं सोचता हूँ कि जो पुस्तकें
लिखी जातीं वे इतनी अधिक होतीं कि समूची धरती पर
नहीं समा पातीं।

मेमना, भेड़ इन शब्दों को यीशु अपने अनुयायिओं के लिए
प्रयोग में लाता था।